ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जनवरी 2025

मूल्य 15 रू.

# आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

## 76वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

इतनी सी बात हवाओं को बताए रखना।
रोशनी होगी चिरागों को जलाए रखना।
फिर लहू देकर की है
जिसकी हिफाजत हमनें।
ऐसे तिरंगे को हमेशा
अपने दिल में बसाए रखना।

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

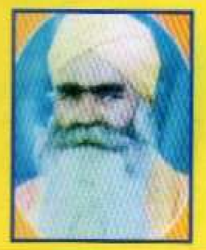

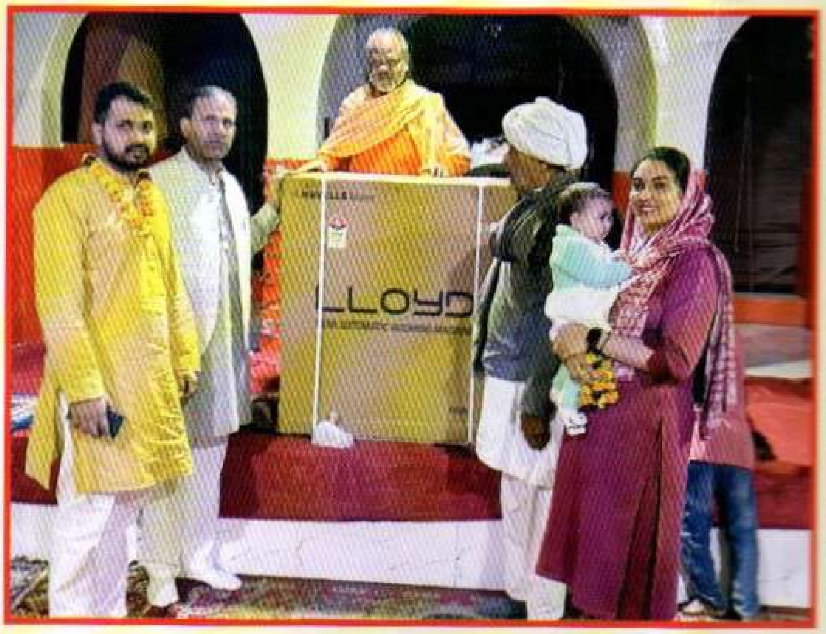

श्री नफे सिंह जी राठी के सुपुत्र श्री राजेश जी राठी, प्रधान आर्य समाज, सैक्टर-2-6-7 के सुपुत्र श्री अभिषेक राठी, पत्नी अंजलि राठी, बेटा अभिराज राठी आत्मशुद्धि आश्रम के ब्रह्मचारियों के लिए कपड़े धोने व सुखाने के लिए LLOYD Automatic Washing Machine भेंट करते हुए। आश्रम के मुख्य अधिष्ठाता तथा ब्रह्मचारियों ने परिवार का धन्यवाद किया परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की- परिवार स्वस्थ और सुखी रहें और इसी प्रकार धार्मिक कार्यों में दान देने की प्रवृति बनी रहे।

\- अमृत आर्य

पूज्या माता श्रीमती कृष्णा राठी जी, पूज्या माता श्रीमती इन्द्रावती जी एवम् श्री व्रत पाल जी राठी, विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़ आत्मशुद्धि आश्रम के ब्रह्मचारियों को स्कूल ड्रेस स्वेटर भेंट करते हुए। आश्रम के मुख्याधिष्ठाता तथा ब्रह्मचारियों ने परिवार का धन्यवाद किया परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की- परिवार स्वस्थ और सुखी रहें और इसी प्रकार धार्मिक कार्यों में दान देने की प्रवृति बनी रहे।

\- अमृत आर्य

प्रिय बन्धुओं! मास जनवरी में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी फरवरी अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क ( मनीऑर्डर/ड्राफ्ट ) द्वारा भेजें अथवा सम्पर्क करके खाता नम्बर लेकर सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। - व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

# आत्म-शुद्धि-पथ ( मासिक )

पौष-माघ सम्वत् 2081 जनवरी 2025

सृष्टि सं. 1960853125 दयानन्दाब्द 200

वर्ष-24 ) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी

( वर्ष 55 अंक 01 )

सम्पादकः आचार्य विक्रम देव
( मो. 9896578062, 7988671343 )

❖

प्रधान सम्पादकः
श्री राजवीर छिक्कारा ( मो. 9811778655 )

❖

सह सम्पादकः डॉ. रवि शास्त्री

❖

परामर्श दाताः सत्यानन्द आर्य,
कन्हैयालाल आर्य, सत्यपाल वत्सार्य

❖

व्यवस्थापकः
आचार्य अमृत आर्य

❖

सदस्यता शुल्क

| | |
|---|---|
| संरक्षक | : 7100 रुपये |
| 15 वर्ष के लिए | : 1500 रुपये |
| पंचवार्षिक | : 700 रुपये |
| वार्षिक | : 150 रूपये |
| एक प्रति | : 15 रुपये |

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

*कार्यालय* : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
जिला-झज्जर ( हरियाणा ) पिन-124507
चलभाषः 9416054195
E-mail : atamsudhi@gmail.com

## अनुक्रमणिका

| विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|
| वह देवों का पुरोहित है | 4 |
| वैदिक हिंसा-हिंसा न भवति | 5 |
| ईश्वर सुनता है! | 7 |
| वेद ही क्यों | 11 |
| राष्ट्र की उन्नति के लिए गृहस्थ को संवारे | 15 |
| पापों से बचें | 19 |
| बहुगुणी मूली | 22 |
| टिप्पा-टिप्पा टिप्स | 24 |
| भाई हो भरत जैसा | 25 |
| तांत्रिकों का खौफ-हमारा भ्रम | 27 |
| बहुत पावन है मकर संक्रान्ति | 29 |
| संविधान लागू होने की 76वीं वर्षगांठ | 30 |
| नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने महान बलिदान देकर.... | 31 |
| दान सूची | 33 |

## विज्ञापन दर

| | |
|---|---|
| पिछला कवर पृष्ठ | 5,100 रुपये |
| अंदर का कवर पृष्ठ | 3,100 रुपये |
| पूरा पृष्ठ अंदर | 2,100 रुपये |
| आधा पृष्ठ | 1,100 रुपये |
| चतुर्थ भाग | 600 रुपये |

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

वेद सन्देश

# वह देवों का पुरोहित है

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**नमस्यत हव्यदातिं स्वध्वरं,**
**दुवस्यत दम्यं जातवेदसम्।**
**रथीर्ऋतस्य बृहतो विचर्षणिः,**
**अग्निर्देवानामभवत् पुरोहितः॥**

ऋग् 3.2.8

ऋषि: **गाथिनो विश्वामित्रः**। देवता: **वैश्वानरः अग्निः**। छन्द: **विराड् जगती।**

**( हव्यदातिम् )** हव्यों को देनेवाले, **( स्वध्वरं )** शुभ यज्ञ के संचालक (प्रभु को) **( नमस्यत )** नमस्कार करो। **( दम्यं )** गृह-हितकारी, इन्द्रिय-दमन में सहायक **( जातवेदसं )** जातवेदा की **( दुवस्यत )** पूजा करो। **( रथीः )** प्रशस्त रथवाला, **( बृहतः ऋतस्य )** महान् सत्य का **( विचर्षणिः )** द्रष्टा **( अग्निः )** तेजस्वी प्रभु **( देवानां )** देवजनों का **( पुरोहितः )** पुरोहित (अभवत्) हुआ है।

आओ, भाइयो! जातवेदा वैश्वानर अग्नि प्रभु को नमस्कार करो, उसकी पूजा करो। प्रभु 'जातवेदस्' इस कारण कहलाता है, क्योंकि वह उत्पन्न पदार्थों को जानता है, प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ में विद्यमान है, जात धनों का उत्पादक है और सब ज्ञानों का आदि स्रोत हैं। सबका नायक और सब जनों का हितकारी होने से वह 'वैश्वानर' है। अग्रणी तथा अग्निवत् प्रकाशमान और प्रकाशक होने से उसका नाम 'अग्नि' है। वह प्रभु 'सु-अध्वर' है, स्वयं ब्रह्माण्ड रूप उत्कृष्ट यज्ञ का संचालन करता है तथा मानवों द्वारा किये जानेवाले उत्तम हिंसा-रहित यज्ञ-कार्यों में सहायक होता है। वह 'हव्यदाति' है, जो कुछ हव्य हम उसे समर्पित करते हैं, वह उसे शतगुणित कर सब देवजनों में विभाजित कर देता है। वह 'दम्य' है, हमारे निवास गृहों के लिए हितकारी हैं, हमारे आश्रय को परिपुष्ट करनेवाला है और इन्द्रिय-दमन में भी हमारा हित-साधक है। महात्मा लोग उसी का सहारा पाकर काम, क्रोधादि के आवेगों को तथा मन एवं इन्द्रियों को जीतकर जितेन्द्रिय कहलाते हैं। अग्नि प्रभु 'रथी' है, प्रशस्त दिव्य रथ का स्वामी है। वह उपासक को अपने उसी शरण-रूप अनुपम रथ पर बैठाकर क्षण-भर में लक्ष्य पर पहुँचा सकता है। वह विचर्षणि' महान् सत्य का द्रष्टा है। हम मानव तो अपने विवेक से जिसे सत्य मानते हैं, वह प्रायः असत्य या अधूरा सत्य होता है। प्रभु निर्भ्रान्त सत्य का ज्ञाता है, जिसमें असत्य का लव-लेश भी नहीं होता और वह अपने पूजक को भी उस सत्य के दर्शन कराता है। वह 'अग्नि'-प्रभु देव-जनों का पुरोहित है, अग्रणी है, नायक है, मार्गदर्शक है। आओ, हम भी देव बनकर प्रकाशमय प्रभु को ही अपना पुरोहित चुनें, उसी के पौरोहित्य में अपने यज्ञों को रचाएँ।


## आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

| | |
|---|---|
| यज्ञ समुच्चय | मूल्य : 50 रु. |
| वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त | मूल्य : 25 रु. |
| स्वस्थ जीवन रहस्य | मूल्य : 20 रु. |
| फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट | मूल्य : 20 रु. |
| आत्मशुद्धि के सरल उपाय | मूल्य : 15 रु. |
| विद्यार्थियों के लाभ की बातें | मूल्य : 15 रु. |
| वृहद् जन्मदिवस पद्धति | मूल्य : 20 रु. |
| चाणक्य-दर्पण | मूल्य : 25 रु. |
| कल्याण-पथ | मूल्य : 20 रु. |
| प्राणायाम-विधि | मूल्य : 10 रु. |
| स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय | मूल्य : 15 रु. |

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

**प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर ( हरियाणा ) पिन-124507,**

**चलभाष :** 09416054195

सम्पादकीय

# वैदिक हिंसा-हिंसा न भवति

शीर्षक से ही ज्ञात हो रहा है कि वेदो में वर्जित हिंसा अगर मनुष्य करता है तो यह हिंसा नहीं। उदाहरणार्थ अश्वमेद्य यज्ञ, गोमेद्य यज्ञ तथा नरमेद्य यज्ञ। जहाँ यज्ञ मांसादि व रूधिर पड़ने से विध्वंस हुए समझे जाते थे वहीं यज्ञो में पशु व नर मांस की बली दी जाने लगी। स्वार्थी, अज्ञानी, लालची व वाममार्गी विचारधारा वाले व्यक्तियों ने अर्थ का अनर्थ करके हमारे यज्ञो को भ्रष्ट करना शुरू कर दिया था। आज भी कहीं-कहीं एकाध घटना समाचार पत्रों के माध्यम से पता लगती रहती है। रामायण काल व महाभारत के समय तक यह कुप्रथा प्रचलित नहीं थी। कुछ राक्षस अवश्य रूधिर व मांस डाल कर यज्ञों को भ्रष्ट करते थे उन्हीं राक्षसों का राम द्वारा संहार किया और यज्ञों कि पवित्रता को स्थापित किया। महाभारत काल में यज्ञों को भ्रष्ट करने का कोई प्रसंग नही मिलता है उल्टा श्रीकृष्ण जी द्वारा यज्ञ व संध्या करने का वर्णन अवश्य मिलता है। ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखते है 'जो व्यक्ति झूठ चलाना चाहता है वह सत्य की निन्दा अवश्य ही करता है। इसलिये वाममार्गियों ने वेद विरुद्ध यह मत खड़ा कर दिया। जो वैदिक हिंसा हिंसा न हो तो तुझ और तेरे कुटम्ब को मार कर होम कर डाले तो क्या चिन्ता है? आगे ऋषि लिखते है की बिना प्राणियो के पीड़ा दिये मांस नहीं प्राप्त होता और बिना अपराध के पीड़ा देना धर्म का काम नहीं। वाममार्गियों ने ऋषियों के नाम से ग्रंथ बना कर अश्वमेद्य, गोमेद्य व नरमेद्य नाम यज्ञ करने लगे और इन का ठीक-ठीक अर्थ नहीं जाना'। ऋषि जी ने इनका ठीक-ठीक उत्तर बताते है।

**राष्ट्रं वा अश्वमेद्यः। अन्नँहि गौः।**
**अग्निर्वा अश्वः। आज्य मेद्यः।**

शतपथ ब्राह्मणे।।

''घोड़े, गाय आदि पशु तथा मनुष्य मार कर होम करना कहीं नहीं लिखा। केवल वाममार्गियों के ग्रंथो में ऐसा अनर्थ लिखा है। सत्य यह हैं कि राजा न्याय धर्म से प्रजा का पालन करें, विधादि का देनेहारा और यज्ञमान द्वारा अग्नि में घी आदि का होम करना अश्वमेद्य, अन्न इन्द्रियां, किरण, पृथ्वी आदि को पवित्र रखना गोमेद्य, जब मनुष्य मर जाय तब उसके शरीर को विधिपूर्वक दाह करना नरमेद्य कहलाता है'

महाभारत के युद्ध मे बहुत से विद्वान् भी समाप्त हो गये और ऋषि लोग वृद्ध हो कर चल बसे। स्वार्थी लोगों का बोलबाला होने लगा और सबसे पहले इसी वाममार्ग ने गंद फैलाया। जिस दुष्ट ने इसकी शाखा चलाई होगी वो तो पता ना कही किट-पंतग की योनि में होगा लेकिन अपने पिछे ऐसा स्वार्थी, घिनोना, छलकपट का मार्ग छोड़ गया जो अब तक भी प्रचलित है और अपने पांव पसार ही रहा है। इस बलि प्रथा का दुष्परिणाम क्या हुआ 'मूर्तिपूजा'।

अब इस मुर्तिपूजा का इतिहास जान लिजिए। जब वाममार्ग अपने चरम पर था तो महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी नामक दो अहिंसक व्यक्ति हुए। जब इन्होंने यज्ञों में बलि देखी तो इसकी अलोचना की और कहा की यह निन्दक और मानवता के विरूद्ध कार्य है। वाममार्गी कहने लगे की ऐसा वेदों में लिखा हुआ है हम तो वेदो की आज्ञा का पालन कर रहे है। बस यही से गुड़-गोबर हो गया। ये महात्मा पढ़े-लिखे तो थे नहीं कह दिया अगर वेद इस तरह की हिंसा का आदेश देते है तो हम वेदों को नहीं मानते। अगर महर्षि दयानन्द की तरह सिद्ध कर देते की बताओं कहां लिखा है हिंसा व मूर्ति पूजा उल्टा ऋषि ने वेदों में ही दिखा दिया देखो लिखा हुआ है न तस्य प्रतिमा अस्ति तो वाममार्गियों की बोलती बन्द हो जाती और यह अनाचार, व्यभिचार और अत्याचार अपने पैर नहीं पसारता। यह लगभग 2400 वर्ष पहले की बात है। यद्यपि इन्होंने अपना कोई स्वतंत्र ग्रंथ व सम्प्रदाय स्थापित नहीं किया लेकिन शिष्य परम्परा ने बेड़ा गर्क कर दिया इनके नाम को भुनाकर अंट-शंट लिखा जाने लगा और स्वयं भी कई सम्प्रदायों मे विभाजित हो गये। महर्षि जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है कि पुरानी, जैनी, कुरानी और किरानी से आज लगभग एक हजार

सम्प्रदाय फैल चुके है और मेरा मानना है कि आज तक यह संख्या लाख से ऊपर हो सकती है कम नही। टी.वी. खोलो, समाचार पत्र पढ़ो सर्वत्र पांखड़, अंधविश्वास व अज्ञानता का बोलबाला है। ना इतिहास जानते ना सत्य बस दो पैसे हुए ना और बनवा दिया मन्दिर। हम थोड़ा सा विषय से हट गये थे आइये वहीं पर आते है। सबसे पहले मूर्ति महात्मा बुद्ध और महावीर की बनी। बौद्ध विहार बनने लगे लाखों स्त्री-पुरुष बौद्ध व जैन सम्प्रदाय के पिछे-2 चलने लगे। गृह त्याग कर जो हजारों युवक-युवतियां लाल श्वेत रंग के कपड़ो में रंगने लगे। वैराग्य, इन्द्रियों के निग्रह और तप के अभाव में व्यभिचार आदि दोषों का विस्तार होने लगा। समस्त भारतवर्ष में अज्ञानता व अविद्या का अन्धकार छा गया। वैदिक संस्कृति का समस्त वैभव अस्तव्यस्त हो गया। ऐसे समय में एक सुर्य की किरण दिखाई दी स्वामी शंकराचार्य ने पुन: वैदिक धर्म की स्थापना का प्रयास किया। मूर्ति पूजा का खंडन किया और परमेश्वर सर्वाधार, निराधार और सर्वव्यापक है। शंकर स्वामी ने बताया की ब्रह्म के दो रूप अर्थात् वह निराकार भी है और साकार भी ऐसा सम्भव नहीं क्योंकि ये दोनों गुण परस्पर विरोधी है। इनके शास्त्रर्थों से पाखंड़ियों की दुकानों पर ताला लगता देखें अल्पायु में ही इनको रसायन युक्त ज़हर दे कर मार दिया। स्वामी शंकर के मरने के पश्चात् पुन: वही सम्प्रदायों की संख्या बढ़कर अपनी-2 ढपली अपना-2 राग अलपने लगा। धर्म को व्यवसाय, अय्याशी व अज्ञानता का विषय बना दिया गया। वाममार्ग, मन्दिर में स्थापित मूर्तियां, तीर्थस्थान और उनके द्वारा जीवन निर्वाह करने वाले लाखों पंडे, पुजारी, साधु-महन्त समस्त व्यावसायिक मशीन के कल-पुर्जे बन बैठे। इस घोर अज्ञानता की हमें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी और वह भी पराधीनता। क्योंकि सबसे पहले गिरावट व शिक्षा का अभाव त्याग-तपस्या की कमी ब्राह्मण वर्ग में आती है इसके पश्चात् क्षत्रीय आदि वर्णों में शिथलता आ कर घोर पतन के रास्ते पर चल कर महा-सागर में देश डूब जाता है। यही हुआ हमारे इस आर्यावर्त के साथ भी।

- राजवीर आर्य, मो. 9811778655


## आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 5100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 350000/-आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

**धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195**

# ईश्वर सुनता है!

**- पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय**

**स श्रृणोत्यकर्णः ( उपनिषद् )**
**सुने विनु काना। ( तुलसीदास )**

ईश्वर के कान नहीं। पर सुनता है। कैसे? मालूम नहीं। फिर क्या कारण है कि मनुष्य प्रार्थना करते हैं और उनकी कामनाएं पूरी नहीं होती? जब इंग्लैण्ड के सम्राट सातवें एडवर्ड बीमार हुए तो समस्त प्रजा की ओर से उनके लम्बे जीवन के लिए प्रार्थना की गई। सभी मंदिरों, सभी गिरजाघरों सभी मस्जिदों में करोड़ों मनुष्यों ने अपनी प्रार्थनाओं के तार ईश्वर की सेवा में उपस्थित किये परन्तु इंग्लैण्ड का सम्राट मृत्यु से न बच सका। लातीनी भाषा का एक वाक्य है 'वौक्स पौपूलाई, वौक्स डी आई' अर्थात् मनुष्यों की आवाज ईश्वर की आवाज है। इसकी सत्यता में सन्देह किया जा सकता है क्योंकि यदि ऐसा होता तो बादशाहों की मृत्यु तो असम्भव हो जाती और विशेषकर दयालु और शीलवान बादशाहों की।

परन्तु मेरा विश्वास है कि ईश्वर सुनता है और अवश्य सुनता है। अभी सन् 1951 की घटना है। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली का मंत्री था। मेरे बक्स में 560/- रुपये थे। मैं और मेरी पत्नी बक्स को दिल्ली में कमरे में बन्द करके प्रचारार्थ बाहर चले गये। बीस दिन के पीछे लौटे तो कमरा बन्द मिला परन्तु तीसरी मंजिल पर पीछे की ओर किसी ने चढ़कर दरवाजा खोल लिया और सब रुपये निकाल लिये।

एक धनी मित्र ने सुना। फोन पर कहा, 'सुना है कि तुम्हारे रुपये चले गये?'

''हाँ बात तो ठीक है।''

''फिर?''

''फिर क्या?''

''मैं सोच रहा हूँ कि 500/- रुपये की थैली तुमको भेंट कर दी जाये। 100/- रुपये मैंने देने का निश्चय किया है। अमुक मित्र ने 200/- केवल 200/- की कसर है।

''आपको धन्यवाद है। परन्तु मैं रुपया नहीं लूंगा। मुझे रुपये की जरूरत होती है तो ईश्वर से माँग लेता हूँ, किसी मनुष्य के समक्ष हाथ नहीं फैलाता।''

''इसीलिए ईश्वर आपको दे भी देता है?''

मैंने इस अन्तिम वाक्य का जो उत्तर दिया उस पर पाठकवर्ग विचार करें। मैंने कहा, 'यह ठीक है कि मैं ईश्वर से मांगता हूँ। ईश्वर सुनता है। अवश्य सुनता है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह सदा मेरी प्रार्थना स्वीकार ही करे। जब सच्चे हृदय से प्रार्थना करने पर भी मेरी कामनायें सिद्ध नहीं होती तो मैं समझ लेता हूँ कि मेरी कामनाओं की असिद्धि में ही मेरा हित था। ईश्वर सुनता अवश्य है। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि मान भी ले। मैं प्रार्थना करता हूँ। आज्ञा तो नहीं देता।'

ईश्वर सुनता है और सहायता करता है। इस सम्बन्ध में मैं अपने जीवन की एक घटना सुनाता हूँ। वह भी बिजनौर की है। सन् 1907 के अन्त की।

मेरा वेतन 45/- रुपये था। मैंने बीमा भी कराया था जिसमें 5 रुपये 11 आने 8 पाई प्रति मास कट जाते थे। घर 39/- रुपये लाता था। घर में मैं था, मेरी पत्नी, मेरी माता, एक मेरे भाई सत्यव्रत, एक मेरी पत्नी के भाई विद्याभूषण। यह दोनों हाईस्कूल के विद्यार्थी थे। दो बच्चे थे। बड़ा सत्यप्रकाश ढाई वर्ष का। छोटा विश्वप्रकाश आठ नौ मास का। मैं बी.ए. की प्राइवेट परीक्षा की तैयारी कर रहा था। संस्कृत ली थी। एक पण्डित जी को टयूशन पर रक्खा हुआ था और कोई आय न थी। 1907 में अकस्मात् अकाल पड़ गया। गेहूँ पहले रुपये के 13 या 14 सेर आते थे। अब इतने घटे कि 6 सेर से भी नीचे गिर गये। कुछ दिनों में मेरे ऊपर ऋण बढ़ गया था तो मित्रों का ही, परन्तु था तो ऋण। यदि ऋण लेते जाओ और चुकाते भी जाओ तो कोई कठिनाई नहीं होती। परन्तु यदि ऋण लिया ही जाये और चुकाने का नाम भी न लिया जाये तो मित्रें में भी कुछ न कुछ भ्रांति की संभावना हो जाती है। फार्सी में कहते हैं कि 'कर्ज मिकराजे मुहब्बत' है। अर्थात् ऋण से प्रेम की हत्या हो जाती है।

**सर्वेषामस्ति शस्त्राणामृणच्छूरी भयङ्करा।**
**छिनत्ति क्षणमात्रेण, प्रेमपाशं चिरन्तनम्।।**

एक दिन मैंने हिसाब लगाया तो 150/- रुपये

ऋण हो गया। आय गेहुँओं के लिए भी पर्याप्त न होती थी। एक दिन वेतन मिला तो 26/- रुपये के गेहूँ लाया। शेष 13 रुपये में क्या करता? चिन्ता अधिक हो गई। मेरी स्त्री खाना पकाती थीं। अपनी चिन्ताओं को हम दोनों ही अकेले में भोग लेते थे। किसी से कुछ कहते न थे। मैंने अपने सब खर्चे पर दृष्टि डाली। मेरी झुंझलाहट यदि समाप्त होती थी तो पत्नी पर। और सुनने वाला भी कौन था?

'इतना अनाज कैसे खर्च हो जाता है?'

''क्या बताऊँ? कैसे? हो तो जाता ही है। कोई बाहर का तो ले नहीं जाता।'

''यदि 26-26 रुपये के गेहूँ खालेंगे तो कैसे काम चलेगा?' 'तुम कहते तो ठीक हो परन्तु मैं भी क्या करूँ?'

'कल से आटा तोलकर साना करो।'

'ऐसा ही करूँगी।'

परन्तु इसका कुछ अच्छा परिणाम न निकला। आज मैं उस सब बात का स्मरण करता हूँ तो पश्चात्ताप होता है। मेरी अवस्था थी 27 वर्ष की। मेरी पत्नी की 21 वर्ष की। यह वह आयु है जिसमें नव-दम्पत्ति खेलने खाने और मजे उड़ाने की सोचते हैं। यहाँ सर मुंडाते ही ओले पड़े। करें तो क्या करें? कोई बात समझ में नहीं आई। उलझन बढ़ती गई। हम दोनों के लिए। बराबर-बराबर! हिसाब लगाता तो सोचता कि यदि 1/- रुपये मासिक भी ऋण चुकाया जाये तो बारह वर्ष लगें और एक रुपया भी कैसे चुके?

ऋण बढ़ने की संभावना है। घटने की नहीं। ऋण भी आगे कौन देगा? समाज का साधारण चन्दा देना भी भारी हो गया। मेरा उन दिनों सम्बन्धियों के विवाहों में जाना भी बन्द था क्योंकि जाने आने के लिए धन चाहिए।

अब केवल एक ही साधन था। वह था ईश्वर से प्रार्थना। जब प्रात: सायं संन्ध्या करने बैठता तो नित्य ईश्वर से प्रार्थना करता कि 'नाथ! कुछ भी विपत्ति दो। ऋण चुकाने का कोई साधन भेज दो।' एक मास बीत गया। न साधन दृष्टि में आया न प्रार्थना करना ही बन्द हुआ। प्रार्थना की सत्यता और तीव्रता बढ़ती गई। उसमें कोई कमी नहीं आई।

एक दिन एक आकस्मिक घटना हुई। उर्दू टीचर ने छुट्टी ली। हैडमास्टर महोदय का परवाना आया कि तुम अमुक अवकाश के अन्तर में अमुक कक्षा को पढ़ा दो। मैं चला गया। लड़कों से पूछा।

'क्या पढ़ते हो?'

एक ने कहा 'उर्दू कवायद।'

'मुझे एक कापी दो। मैं पढ़ाऊँ।'

मैं पुस्तक लेकर पढ़ाने लगा। वह पुस्तक नये ढंग की थी जिसमें उर्दू के व्याकरण को अंग्रेजी व्याकरण से मिलान करके लिखा गया था। इण्डियन प्रेस की छपी हुई थी। मैंने ऐसा व्याकरण पहले कभी देखा नहीं था। मेरा उर्दू और हिन्दी की शिक्षा से कोई सम्बन्ध भी न था।

मेरे मन में कुछ विचार उत्पन्न हुआ। झट से जेब से कार्ड निकाल कर इण्डियन प्रेस इलाहाबाद को लिखा।

''क्या आप इस प्रकार का हिन्दी व्याकरण भी छापेंगे?'' दो तीन दिन के पीछे उत्तर आया, ''पुस्तक लिखी हो तो भेज दो हम छापने को उद्यत हैं। क्या तुमने कोई पुस्तक कभी लिखी है?''

मैंने इससे पहले कोई पुस्तक नहीं लिखी थी। क्या उत्तर देता?

मैंने व्याकरण लिखना भी आरम्भ नहीं किया था। बिना किसी आशा के एक कार्ड लिख दिया था। मैंने उत्तर में गोलमाल लिखा कि ''कुछ पत्रों को लेख तो लिखता रहा हूँ। पुस्तक कोई नहीं लिखी। आप मेरा लिखा व्याकरण ही देख लें। और यह भी लिखें कि क्या रायल्टी देंगे।'

इधर तो पत्र डाला और उधर लिखने बैठा। प्रात:काल से लेकर रात को सोते समय तक लिखता। दस दिन बराबर मेरी लेखनी चलती ही रही। नहीं मालूम कि खाना भी मजे से खाया या नहीं। स्कूल अवश्य जाता परन्तु अवकाश के अनुसार वहाँ भी लिखता ही रहा।

इण्डियन प्रेस से उत्तर आया, ''हम रायल्टी नहीं देते। पुस्तक देखकर बता सकेंगे कि क्या दे सकते हैं।

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यवेत्ता पं. श्री पद्मसिंह जी शर्मा मेरे मित्र थे। एक दिन वे बिजनौर में आये। मैंने उनसे व्याकरण की चर्चा की और पूछा कि मुझे उसका क्या मांगना चाहिए। वह इन बातों से अपरिचित

से प्रतीत हुए। उन्होंने कहा "पुस्तक भेज दो और मूल्य उन्हीं लोगों के निश्चय पर छोड़ दो।"

यदि मुझे उस पुस्तक के 20 रुपये भी मिल जाते तो मैं संतुष्ट हो जाता। न होने से कुछ होना अच्छा है। मुझे जानता ही कौन था और मैंने ऐसा काम ही क्या किया था जिसके आधार पर कुछ साहस करता?

पुस्तक रजिस्ट्री करके भेज दी गई, ईश्वर से प्रार्थना जारी रही। यह ज्ञात नहीं कि कुछ आशा की आभा दिखाई दी या नहीं। यह भी ठीक-ठीक पता नहीं कि मानसिक अवस्था कैसी थी? तीसरे ही दिन लौटती डाक से उत्तर आया-

'हमारे पास इसी ढंग की एक पुस्तक आई है जिसका हमने 150/- रुपया दिया है। तुम्हारी पुस्तक उससे बहुत अच्छी है अत: तुमको हम 200/- रुपये दे सकते हैं। 100/- अभी और 100/- रुपये प्रकाशित होने पर।'

आप समझ सकते है। कि मेरा दिल कितना उछला होगा। दो सौ रुपये। कर्ज तो 150 /- रुपये ही है। ईश्वर ने मेरी टेर सुन ली।

रहिमन चुप हो बैठिये देख दिनन के फेर।
जब नीके दिन आइहैं बनत न लगिहै देर।

मैं फूला न समाया। उस खुशी में स्कूल के बरांडे से नीचे उतरा तो ऐसी असावधानी से पैर रक्खा कि पैर में मोंच आ गई। परन्तु मन की प्रसन्नता तो सैकड़ों मोंचों की पीड़ा से भी कहीं अधिक थी। स्कूल में ही इण्डियन प्रेस को उत्तर लिखा।

"मुझे स्वीकार है। परन्तु 150/- रुपये अभी दीजिए। 50 रुपये छपने पर।" तीसरे दिन इण्डियन प्रेस से 150/- रुपये के करेंसी नोट बीमा द्वारा आ गये। मैंने उसी दिन पूरा ऋण चुका दिया। मेरा मुख उज्ज्वल हो गया। किसी को पता न चला कि यह रुपया कहां से आया। जब कष्ट दूर हो जाता है तो कष्ट की स्मृति पर हंसी आती है।

उस दिन से मेरी श्रद्धा ईश्वर प्रार्थना पर बढ़ गई। जब कभी मेरे पास कोई अपना दु:ख लाता है तो मैं उसे यही परामर्श देता हूँ कि श्रम करो और सच्चे दिल से ईश्वर से प्रार्थना करो। इलाहाबाद के प्रसिद्ध नागरिक थे रायबहादुर लाला सीताराम। वह हिन्दी भाषा के प्रभावशाली विद्वान् थे। उनकी एक बात मुझे याद है। वह कहते थे कि यह लोकोक्ति अधूरी है कि ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं। जो अपनी मदद आप कर सकता है ईश्वर उसकी मदद क्यों करने लगा? जो बच्चा अपने हाथों दूध पी सकता है उसे माता दूध नहीं पिलाती। जो दौड़ सकता है उसे गोद में नहीं लिया करती। ऐसी सहायता की न किसी को आवश्यकता है न ईश्वर ऐसों की सहायता करता है। इस लोकोक्ति में कुछ परिवर्तन की आवश्यकता है।

ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करने में असमर्थ सिद्ध हो चुके हैं। जो बच्चा यत्न करने पर भी नहीं उठ सकता और अपनी भोली आँखों द्वारा माता से सहायता की याचना करता है। माता उस पर अवश्य ही दया करती है।

इसका यह अर्थ नहीं कि आप ईश्वर से हर एक चीज मांगने लगें और ईश्वर आपको सब कुछ भेजता रहे। ऐसी सहायता तो प्राणी का उत्थान नहीं करती। मैं अपनी ही बात कहता हूँ। जब मुझे दस दिन के परिश्रम से 200 रुपये मिल गये तो मैंने समझा कि इस प्रकार तो मैं शीघ्र ही धनाढ्य हो जाऊँगा। परन्तु अब मेरी प्रार्थना में वह बल नहीं रहा था और न आवश्यकता ही ऐसी थी। अत: फिर मुझे ऐसी सहायता नहीं मिली। मैंने भी समझा कि यदि कुछ भौतिक लाभ न हो और केवल ईश्वर विश्वास ही दृढ़ हो जाये तो वह संसार के सभी और लाभों से बढ़कर है।

मेरे जीवन में एक बार और ऐसी घटना आई है। वह थी 1924 ई. की बात। मैं इसी प्रकार की आर्थिक कठिनाई में पड़ गया था। जहाँ-जहाँ से आशा थी वहाँ-वहाँ निराशा हो गई। मैं चिन्तित हो उठा। अन्त को कोई उपाय न देखकर मैंने वही पुराना उपाय सोचा, 'जिसका कोई न हो उसका ईश्वर है' मैंने उसी प्रकार प्रार्थना करनी आरम्भ की।

कई दिनों के पश्चात् एक आकस्मिक घटना हुई। मैं प्रयाग में रहता था। मेरे एक मित्र हैं बाबू हर प्रसाद। यह आजकल तो कई सौ रुपये पेंशन पाते हैं। उन दिनों उनको शायद 25 रुपये मासिक वेतन मिलता था। वह मेरे पास चार बजे प्रात:काल लालटेन लेकर संस्कृत पढ़ने आया करते थे। एक दिन पूर्ववत् वह पढ़ने आये तो कुछ घरेलू बातचीत चल पड़ी। मुझे आवश्यकता

थी 2000 रुपये की। मैं ब्याज पर ऋण लेने को तैयार था। परन्तु ऋण भी नहीं मिलता था। वे बोले, 'आपका तो प्रयाग में मान है। कई धनाड्य मित्र हैं। 2000 रुपये कोई दे देगा। मेरे मुँह से निकला, 'भाई! धनाढ्य होना या मित्र होना दूसरी बात है। और ऋण मिलना दूसरी बात।' वह बोले, मेरे सेविंग बैंक में 600/- रुपया है। मैं निकाल दूँ। आप पीछे से देते रहना। मैंने कहा, 'यदि आवश्यक हुआ तो कहूँगा।' जब वह चले गये तो मैं जी में कहने लगा कि यह विचारा 35 रुपये पाने वाला अपनी पसीने की कमाई के 600 रुपये मुझे देने को उद्यत हैं। बिना किसी विशेष आशा के। ऐसा व्यवहार तो मेरे लखपती मित्रों ने भी नहीं किया।

उस समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो मेरे हृदय के ऊपर से एक बोझ सा उतर गया क्योंकि 500 रुपयो में भी उस समय की बला टल सकती थी। अब उत्साह के साथ मैं एक सज्जन के पास गया जिनसे मुझे अगले वर्ष कुछ रुपया मिलना था। अब मेरे चेहरे पर उदासी न थी। न गिड़गिड़ी। गिड़गिड़ाया तो मैं अब तक किसी के समक्ष नहीं। मैंने उनसे मिलकर साधारणतया कहा, 'क्यों जी आप मुझे इस समय 500/- रुपये क्यों नहीं दे देते?' उन्होंने कहा, 'दे सकते हैं। परसों भेज देंगे।' जब उनके यहां से 500 रुपये आ गये तो मैंने बाबू हरप्रसाद जी से 500 रुपये निकलवा लिये और 1000 रुपये में काम चल गया। मैंने 6 मास में यह 500 उनको लौटा दिये।

मनुष्य स्वभावतः स्वार्थी भी है और लोभी भी। और मैं भी काम, क्रोध, लोभ, मोह के दुरित चतुष्टय से मुक्त नहीं हूँ। मनुष्य सदा 99 के फेर में रहता है। परन्तु मुझे अत्यावश्यक अर्थ की कठिनाई केवल दो बार हुई है। और ईश्वर ने वहां से सहायता भेजी है जहाँ से सहायता मिलने का किसी को दूर का अनुमान भी नहीं हो सकता।

## आवश्यकता

गुरुकुल के छात्रों के लिए मुख्य आवश्यकता स्कूल पुस्तक की है जो भी भक्त जन इसमें सहयोग करना चाहते है कर सकते है, सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें-

आचार्य अमृत आर्य
मो. 9990108323

**गायत्री महिमा धूप, अगरबत्ती एवं हवन सामग्री**

**ऋतु अनुकूल**

| | | |
|---|---|---|
| विशिष्ट | 40.00 | रु. प्रति किलो |
| उत्तम | 50.00 | रु. प्रति किलो |
| विशेष | 60.00 | रु. प्रति किलो |
| डीलक्स | 80.00 | रु. प्रति किलो |
| सर्वोत्तम | 140.00 | रु. प्रति किलो |
| सुपर डीलक्स | 320.00 | रु. प्रति किलो |

**ओ३म ध्वज भाव इस प्रकार है**

21/- ओ३म ध्वज (साइज 16X22)
42/- ओ३म ध्वज (साइज 22X34)
53/- ओ३म ध्वज (साइज 34X44)
42/- गायत्री मंत्र पटका

**हवन कुंड भाव इस प्रकार है**

450/- हवनकुंड 9'' स्टैड के साथ (आयरन)
560/- हवनकुंड 12'' स्टैड के साथ (आयरन)

# लाजपतराय सामग्री स्टोर

हवन सामग्री धूप एवम् अगरबत्ती, कलावा, रौली, सिंदूर, ज्योत बत्ती, जनेऊ एवं ड्राई कोन धूप, हवन कुण्ड, ओ३म ध्वज, ओ३म पटका, गुगल, लोबान, कपूर, व अर्टिफिशल फ्लावर इत्यादि

ऑफिस - 856, (ब्रांच ऑफिस : 3543), कुतुब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110006

फैक्टरी - 195/3, नंगली, सकरावती, नजफगढ़, दिल्ली -110043

E-mail : gayatrimahima70@yahoo.com

# वेद ही क्यों

–पं. क्षितीश कुमार वेदालंकार

संसार के सभी मत वाले अपने-अपने धर्म ग्रन्थों को ईश्वरीय ज्ञान कहते हैं, तब प्रश्न उठता है कि वेद ही क्यों? इस प्रश्न का सुलझा उत्तर आर्य समाज के उच्च कोटि के विद्वान्, वक्ता और पत्रकार लेखक की लेखनी से पढ़िए। -सम्पादक

इस प्रश्न को उपस्थित करने वाले दो प्रकार के वर्ग हैं। एक वर्ग को हम आस्तिक या धार्मिक लोगों का वर्ग कह सकते हैं और दूसरे वर्ग को नास्तिक या अधार्मिक लोगों का वर्ग।

जो नास्तिक या अधार्मिक लोग हैं वे तो ईश्वर या धर्ममात्र के विरोधी हैं। उनकी दृष्टि में सभी धर्मग्रन्थ त्याज्य हैं, इसलिए वे किसी भी धर्मग्रन्थ के गुणावगुण पर विचार करने को भी तैयार नहीं, परन्तु जो धार्मिक लोग हैं, वे भी नाना सम्प्रदायों और अनेक मत-मतान्तरों में बंटे हुए हैं और हरेक मतवादी अपने ही धर्मग्रन्थ को सर्वश्रेष्ठ मानता है। ऐसा मानना स्वाभाविक भी है। मतवादियों को अपने मत से मोह होता ही है। इस मोह के वशीभूत होकर यदि कोई अपने मत को अन्य मतों से तथा अपने धर्म ग्रन्थ को अन्य धर्मग्रन्थों से उत्कृष्ट समझें तो इसे अनुचित कैसे कहा जाये? प्रत्येक माता को अपना पुत्र ही संसार में सबसे सुन्दर लगता है न।

विभिन्न मतवादी लोग अपने मत की उत्कृष्टता सिद्ध करने में इस सीमा तक आगे बढ़ गये हैं कि वे अपने धर्मग्रन्थ को ही ईश्वर कृत मानते हैं और अपने धर्मग्रन्थ की भाषा को भी ईश्वरीय या दैवीय भाषा मानते हैं। प्राचीन यहूदी लोगों का विश्वास था कि परमात्मा को केवल हिब्रू भाषा ही आती है, उसी हिब्रू भाषा में उसने संसार को धर्म का उपदेश दिया। जैनी लोग चिरकाल तक यह मानते रहे हैं कि तीर्थकरों की भाषा केवल मागधी थी। यही दिव्य भाषा है इसीलिए उसी में उपदेश दिया गया है। यहाँ तक कि उनके विश्वास के अनुसार संसार भर के पशु-पक्षी भी मगधी भाषा ही जानते हैं।

अधार्मिक या नास्तिक लोगों की बात फिलहाल छोड़ दें। उनकी आवाज में जितना कोलाहल का जोर है उतना तर्कों का औचित्य नहीं। नास्तिकता एक फैशन बन गया है और फैशन तर्कातीत होता है, परन्तु जो आस्तिक हैं और धार्मिक हैं, उनमें भी परस्पर इतने मतभेद हैं कि बहुत बार इनकी परस्पर सिर फुटव्वल देखकर यही मन में आता हैं कि इनसे तो नास्तिक ही अच्छे।

परन्तु नास्तिकता से भी मनुष्य की बुद्धि को सन्तोष नहीं होता। वह ऊहापोह करती ही रहती है-मनुष्य के मन में मोह का समावेश भी होता ही रहता है- परन्तु उस मोह के कारण क्या वह इतना अन्धा हो जाये कि सत्य और असत्य तथा न्याय और अन्याय में विवेक करना भी छोड़ दे।

तो फिर सत्य को पहचानने का उपाय क्या है? हरेक धर्मावलम्बी अपने धर्मग्रन्थ के ही सर्वश्रेष्ठ होने का दावा करे तो उन दावों की परीक्षा कैसे की जाये?

**एक अचूक उपाय**- इसका उपाय बड़ा सरल है। कोई भी इतिहास का विद्यार्थी यदि अपनी आंखों पर से पक्षपात की ऐनक उतार कर संसार भर के धर्मग्रन्थों का अध्ययन करे तो वह एक बात देखकर चकित रह जायेगा। उसे उन सब धर्मग्रन्थों की कुछ बातों में परस्पर समानता प्रतीत होगी। (यहाँ यह कहने का हमारा अभिप्राय नहीं है कि सब धर्मग्रन्थों में सब बातें समान हैं। परस्पर विरोध भी है, भयंकर विरोध है। पर कुछ बातें मिलती-जुलती अवश्य हैं। इससे कोई इंकार नहीं कर सकता।) यह समानता मानव बुद्धि की समान चिन्तन प्रणाली की द्योतक है। यदि ऐसी बात न होती तो अच्छी बात को सारा संसार अच्छा और बुरी बात को सारा संसार बुरा न कहता। न्याय और अन्याय की कसौटी भी नहीं रहती।

सहज और सरल उपाय यही है कि सब धर्मग्रन्थों में जितनी बातें समान हैं उन्हें एकत्र कर लीजिए और जिन बातों में परस्पर विरोध है, उन्हें छोड़ दीजिए। सब धर्मग्रन्थों की परस्पर समान बातें ही धर्म हैं, ग्राह्य हैं, आदेय हैं और परस्पर विरूद्ध बातें अधर्म हैं, अग्राह्य हैं और हेय हैं।

स्वभावत: प्रश्न होगा कि वेद ही क्यों इस प्रश्न के साथ उक्त कथन की क्या संगति है? उत्तर से पहले हम पूछते हैं कि विभिन्न धर्मग्रन्थों से चुन-चुनकर जो परस्पर समान बातें आपने एकत्र की हैं-जिन्हें धर्म का शुद्ध स्वरूप कहा जा सकता है, उन सबका मूल आधार क्या है?

क्या कुरान? क्या पुराण? क्या बाइबिल? क्या जेंद अवस्ता? क्या त्रिपिटक? क्या कोई अन्य धर्मग्रन्थ?

उत्तर में वितण्डा की आवश्यकता नहीं। यह सीधा इतिहास का प्रश्न है। इतिहास की शरण लीजिए और सही उत्तर को खोजिए।

संसार के समस्त इतिहासज्ञ जानते हैं कि अब से लगभग 1400 (1447) वर्ष पहले हजरत मुहम्मद साहब इस संसार में नहीं थे। जब इस्लाम के पैगम्बर ही नहीं थे तो उनके पैरोकार कहाँ से होते? कहाँ से होती उनकी कुरान? स्पष्ट है कि अब से लगभग 1400 (1447) साल पहले इस दुनिया में हजरत मुहम्मद साहब, कुरान शरीफ और इस्लाम का नाम लेने वाला कोई नहीं था, उनका अस्तित्व नहीं था।

फिर रही बाइबिल। बाइबिल को अधिक से अधिक 1966 (अब 2019) साल पुराना माना जा सकता है क्योंकि ईसा के साथ सम्बद्ध ईस्वी सन् इससे आगे बढ़ने की अनुमति नहीं देता। यद्यपि सत्य तो यह है कि बाइबिल का कोई भी भाग ईसा के समय नहीं बना था, वह उनके शिष्यों की कृति है, ठीक वैसे ही जैसे कि त्रिपिटक महात्मा बुद्ध की नहीं प्रत्युत उनके शिष्यों की कृति है। जो भी हो, बाइबिल का या न्यू टेस्टामेंट का समय और पीछे नहीं ले जाया जा सकता। जब 1966 (अब 2019) वर्ष पहले हजरत ईसा मसीह ही नहीं थे तो खीस्ती धर्म या उनका धर्मग्रन्थ बाइबिल भी कहाँ से होता।

तो क्या यहूदियों का धर्मग्रन्थ 'तनख' उस समानता का आधार है? परन्तु यहूदियों के पैगम्बर हजरत मूसा का काल 3500 वर्ष से अधिक पीछे नहीं जा सकता। स्वयं यहूदी भी वैसा ही मानते हैं। जब हजरत मूसा का ही प्रादुर्भाव नहीं हुआ था, तब यहूदी मत के प्रादुर्भाव का प्रश्न ही नहीं। इसलिए यह निर्विवाद है कि अब से लगभग 3500 वर्ष पहले संसार में यहूदी मत का अस्तित्व नहीं था।

क्या जेंद अवस्ता पारसियों का धर्मग्रन्थ उसका आधार है? पारसी मत के प्रवर्तक हजरत जरदुश्त का समय अब से 3800 वर्ष पूर्व माना जाता है। कुछ विद्वान् हजरत मूसा और हजरत जरदुश्त की समकालीनता, परस्पर भेंट, कुछ काल तक एक ही शहर में निवास और परस्पर विचारों के विनिमय की बात को सर्वथा प्रामाणिक नहीं मानते और वे हरजत जरदुश्त का समय खींच कर 4100 साल पहले तक ले जाते हैं, परन्तु इसके आगे उनकी भी गति नहीं है। कहने का भाव यह है कि हजरत जरदुश्त और उनके द्वारा प्रचलित पारसी मत तथा उनके धर्मग्रन्थ को किसी भी हालत में 4100 वर्ष से अधिक पुराना सिद्ध नहीं किया जा सकता।

**भारतीय मत**- जहां तक भारत में प्रचलित मतों का प्रश्न है उनमें बौद्ध और जैन मत प्रमुख हैं, जिनको वैदिक परम्परा से भिन्न परम्परा में गिना जा सकता है। शैव, शाक्त या वैष्णव आदि सम्प्रदाय तथा उनकी अनेकानेक शाखाएँ वैदिक परम्परा के ही अंग हैं- उनमें विकार चाहे कितना ही आ गया हो, किन्तु इन सम्प्रदायों ने वेद के प्रामाण्य का खण्डन करने का कभी साहस नहीं किया। कबीरपन्थ, नानकपन्थ अर्थात् सिख मत या राधास्वामी मत आदि मत इतने अर्वाचीन हैं कि प्राचीनों की सभा में इन अर्वाचीनों का प्रवेश समीचीन नहीं प्रतीत होता है। ब्रह्माकुमारी आदि

सम्प्रदाय तो विशुद्ध गुरुडम की उपज है- ये भारतभूमि की उस उर्वरा शक्ति के द्योतक हैं जिसके कारण हर बरसात में जगह-जगह खुम्बियाँ या अन्य झाड़-झंखाड़ स्वतः उग आते हैं और किसी भी कुशल किसान को अपनी अनाज की फसल बोने से पहले खेत से उन्हें साफ करना ही पड़ता है। प्राचीनों की सभा में इन झाड़-झंखाड़ों का प्रवेश तो क्या, उन्हें दौवारिक की योग्यता का पात्र भी नहीं समझा जा सकता ।

महात्मा बुद्ध का समय प्रायः सभी इतिहासकारों की दृष्टि में ईसा से लगभग 400 वर्ष पूर्व माना जाता है। इस प्रकार उनका समय हुआ। 1966 (2019)+400=2366 वर्ष पूर्व (अब के अनुसार 2419)। स्थूल रूप से हम कह सकते हैं कि महात्मा बुद्ध का समय अबसे लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व है अर्थात् ढाई हजार वर्ष से पहले महात्मा बुद्ध या बौद्ध मत की कल्पना नहीं की जा सकती।

रहा जैन मत। यदि जैन मत का प्रवर्तक महावीर स्वामी को माना जाये तो वर्धमान महावीर और गौतम बुद्ध दोनों समकालीन थे, उनकी परस्पर भेंट भी हुई, दोनों ही राजकुमार थे और दोनों ने अपने समय की राजनीत को भी कभी प्रभावित किया था। यदि राजनीतिक दृष्टि से तत्कालीन इतिहास का अध्ययन किया जाये जिसकी कि परम्परा अपने देश में बहुत कम है, तो कदाचित् वैशाली को अपना कार्यक्षेत्र बनाने वाले इन दोनों महात्माओं की सामन्तोचित कूटनीतियों के परस्पर घात-प्रतिघात का भी आंकलन किया जा सके। पर वह विषयान्तर है। कहने का भाव केवल यह है कि वर्धमान महावीर और शाक्य पुत्र गौतम के समकालीन होने के कारण जैन धर्म को भी बौद्ध धर्म का समकालीन अर्थात् ढाई हजार वर्ष पुराना ही माना जा सकता है।

परन्तु आजकल के जैनियों की प्रवृत्ति अपने मत को इससे बहुत प्राचीन सिद्ध करने की है। वे वेद के अन्दर भी अपने तीर्थकरों का वर्णन खोजते हैं। परन्तु जैसे **'ईशावास्यमिदिं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्'** इस मन्त्र खण्ड के आधार पर वेद में हजरत ईसामसीह का उल्लेख सिद्ध करना उपहासास्पद है या **'पश्येम शरद...... शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्'**- इस मन्त्रखण्ड में मक्का मदीना का उल्लेख सिद्ध करना उपहासास्पद है, वैसा ही उपहासास्पद है **''त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति''** और **''घनाघनः क्षोभणश्चषणीनाम्''** आदि मन्त्र खण्डों में से भगवान् ऋषभदेव का वर्णन निकालना, परन्तु यहाँ हम इस विवाद में नहीं पड़ते। यदि जैनी लोग अपने मत को ढाई हजार वर्ष पुराना नहीं उससे अधिक पुराना मानते हैं तो मानें। उससे हमारे युक्तिक्रम में कोई अन्तर नहीं आता। अपने मत प्रवर्तक और मत के प्रादुर्भाव की जो भी तिथि वे निर्धारित करना चाहें करें। इतना निश्चित है कि इतिहास में उन्हें ऐसा काल निर्धारण अवश्य करना पड़ेगा जब उनके मत-प्रवर्तक या मत का अस्तित्व संसार में नहीं था और उसके बाद वे अस्तित्व में आये।

**युक्ति का आधार**- हमारे युक्तिक्रम का आधार यह है कि संसार के ये जितने मत-मतान्तर हैं और जितने उनके धर्मग्रन्थ हैं. वे भले ही अपने आपमें ईश्वरीय ज्ञान होने का दावा करें, परन्तु वे ईश्वरीय नहीं, मानवकृत हैं। इन मतों के विशिष्ट पैगम्बर हैं. उन पैगम्बरों की विशिष्ट जन्मतिथियाँ हैं, उन धर्मग्रन्थों के तैयार होने का विशिष्ट समय है। इतिहास इसका साक्षी है। इतिहास के इन तथ्यों को झुठलाया नहीं जा सकता और इन धर्मग्रन्थों में कुछ बातों में समानता है, यह भी निर्विवाद है। उदाहरणार्थ मनुस्मृति के अनुसार धृति, क्षमा, अस्तेय, इन्द्रियनिग्रह, अक्रोध आदि जिन तत्त्वों को धर्म का लक्षण बताया गया है, क्या ईसा का गिरि प्रवचन (सर्मन ऑन द माउण्ट), मूसा के दस आदेश (टैन कमाण्डमेंट्स) और महात्मा बुद्ध द्वारा वर्णित अष्टांगिक मार्ग या आर्य सत्य तथा कुरान द्वारा वर्णित सच्चे मुसलमानों के रोजा, जकात आदि कर्त्तव्यों में कोई विशेष अन्तर है? योगदर्शन में-

**''तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा:''** और **''शौचसन्तोषतप: स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा:''** कहकर जिन यमों और नियमों का उल्लेख किया गया है, वे प्रकारान्तर से सार्वत्रिक नियम हैं और संसार के सभी धर्मों में इन गुणों को समान रूप से आदर की दृष्टि से देखा गया है। अन्तर है तो सामाजिक विधि-विधानों में, सृष्टि रचना की प्रक्रिया के वर्णन में या मतवादी साम्प्रदायिक मान्यताओं में। इसी कारण महात्मा गांधी कहा करते थे कि किसी धर्मात्मा हिन्दू में, या धर्मात्मा मुसलमान में या धर्मात्मा ईसाई में जीवन की पवित्रता की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं होता। कोई धर्म ऐसा नहीं हो सकता जो सत्य, अहिंसा, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान को धर्म का अंग न माने, उन्हें अधर्म बताए।

हमारा स्थापना यह है कि धर्मग्रन्थों में पाई जाने वाली समानताओं का आधार (प्रत्युत कहना चाहिए कि असमानताओं का आधार भी, क्योंकि असमानताएं भी बहुत बार किन्हीं समानताओं का विकृत रूप ही होती हैं) वेद हैं, क्योंकि समस्त उपलब्ध धर्मग्रन्थों में वेद सबसे प्राचीन है। मैक्समूलर ने जब यह कहा था- 'वेद हमारे लिए मनुष्य बुद्धि के सबसे पुराने परिच्छेद के परिचायक हैं'- तब से आज तक इस उक्ति का खण्डन नहीं किया जा सकता, प्रत्युत दिन-प्रतिदिन इसी बात की पुष्टि होती गई कि संसार के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन पुस्तक 'वेद' है।

विशुद्ध तर्क की खातिर यह भी कहा जा सकता है कि यदि किसी दिन पुरातत्त्वान्वेषियों को कहीं किसी अज्ञात स्थान की खुदाई में से कोई ऐसा ग्रन्थ मिल जाये जो वेदों से अधिक प्राचीन सिद्ध हो सके और इस ग्रन्थ का वर्ण्य विषय वेदों से ही मेल खाता हो तो तर्क प्रवण वेदाभिमानियों को यह मानने में संकोच नहीं करना चाहिए कि वेद का आधार वह नव-उपलब्ध ग्रन्थ होगा, परन्तु जब तक संसार के विद्वान् इस बात पर सहमत हैं कि वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं तब तक यह निष्कर्ष निकालना सर्वथा तर्क संगत है कि इन सब समानताओं का आधार वेद है, क्योंकि वही सबसे प्राचीन है।

**वेदों का निर्माण काल** पूछा जा सकता है कि वेदों का निर्माण काल क्या है? हम स्वीकार करते हैं कि इस विषय में विद्वानों में मतभेद हैं, परन्तु एक बात असंदिग्ध रूप से कही जा सकती है और वह यह कि ज्यों-ज्यों अनुसंधान की गहराई बढ़ती जाती है त्यों-त्यों वेद का समय लगातार पीछे ही पीछे खिसकता जाता है। विषय के संक्षिप्त निदर्शन के लिए हम यहाँ एक तालिका दे रहे हैं. जिससे बात और स्पष्ट हो जायेगी।

**वेदों का अनुमानिक काल**

1. **मैक्समूलर** 800 वर्ष ई. पू. कम से कम 1500 वर्ष ई. पूर्व अधिक से अधिक।
2. **मैक्डॉनल्ड** 1000 वर्ष ई. पू. कम से कम 2000 वर्ष ई. पूर्व अधिक से अधिक।
3. **हॉग** 1400 वर्ष ई. पू. कम से कम 2000 वर्ष ई. पूर्व अधिक से अधिक।
4. **विटसन** 1500 वर्ष ई. पू. कम से कम 2000 वर्ष ई. पूर्व अधिक से अधिक।
5. **ग्रिफिथ** 1500 वर्ष ई. पू. कम से कम 2000 वर्ष ई. पूर्व अधिक से अधिक।
6. **हिवटनी** 1500 वर्ष ई. पू. कम से कम 2000 वर्ष ई. पूर्व अधिक से अधिक।
7. **जैकोबी** 1500 वर्ष ई. पू. कम से कम 4000 वर्ष ई. पूर्व अधिक से अधिक।
8. **तिलक** 1500 वर्ष ई. पू. कम से कम 8000 वर्ष ई. पूर्व अधिक से अधिक।

इसका अभिप्राय यह है कि पाश्चात्य विद्वान् वेदों का काल अधिक से अधिक अब से 6000 वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं, जबकि लोकमान्य तिलक इस समय को 10000 वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं। अन्य भारतीय विद्वान् इस काल को दस हजार वर्ष से और बहुत पीछे तक ले जाते हैं।

# राष्ट्र की उन्नति के लिए गृहस्थ को संवारे

- डॉ. गंगा शरण आर्य

संसार की समस्त संस्थाओं में गृहस्थ संस्था सबसे सर्वोत्कृष्ट एवं महत्वपूर्ण संस्था है। भूलोक की लगभग निन्यानवें प्रतिशत आबादी इस संस्था की सदस्य है। सच्चे और चरित्रवान् व्यक्तियों के अभाव का रोना आज सर्वत्र रोया जा रहा है। विद्यार्थियों के बिगाड़ पर भी हर ओर विपुल प्रलाप किया जा रहा है। संन्यासी, गुरु-शिष्य, माता-पिता, पुत्र-पुत्री, राजा-प्रजा, नेता, मंत्री इन सबकी भ्रष्टता पर बहुत आंसू बहाए जा रहे हैं। यह समझ लेना चाहिए कि गृहसंस्थाओं से ही सब संस्थाओं में सदस्य जाते हैं। राजा, मंत्री, कर्मचारी, नेता, अध्यापक, उपदेशक, लेखक, श्रमिक, सेवक, विद्यार्थी सब गृहस्थ के घर से ही आते हैं।

गृहस्थ जीवन नष्ट हो रहा है। गृह भ्रष्ट हो गए हैं। भ्रष्ट गृहों में भ्रष्ट प्रजा का निर्माण हो रहा है। भ्रष्ट गृहों की भ्रष्ट प्रजा ने आश्रम क्षेत्र, शासन क्षेत्र, विद्या क्षेत्र, धर्म क्षेत्र, सेवा क्षेत्र, समस्त क्षेत्रों को भ्रष्ट कर दिया है। गृहस्थ संस्था के भ्रष्ट हो जाने के कारण ही सब संस्थाएँ भ्रष्ट हो गई हैं, समाज भवन भ्रष्ट हो गए हैं, मंदिर भ्रष्ट हो गए, मस्जिद चर्च व स्कूल, कॉलिज भ्रष्ट हो गए हैं। शासन भ्रष्ट हो गया है, शासक भ्रष्ट हो गए हैं राज कर्मचारी और नेता भ्रष्ट हो गए हैं। पूरी जनता में भ्रष्टाचार अपनी जड़े जमाता जा रहा है। समाज में हर तरफ हिंसा लूट बलात्कार और अपहरण इत्यादि का ताण्डव नृत्य हो रहा है। स्त्रियां खुद को अपने घर में भी सुरक्षित महसूस नहीं कर रही हैं। 4-5 साल की मासूम तो क्या यहाँ दुधमुंही बच्चियाँ भी आज सुरक्षित नही हैं। यहाँ तक कि उनके साथ बलात्कार के पश्चात् सबूत मिटाने हेतु उनकी निर्मम हत्या भी कर दी जाती है चारों ओर इस प्रकार का दूषित माहौल हो गया है। हर तरफ मानो इंसान नहीं दुर्व्यसनी राक्षसों ने डेरा डाल रखा हो। इसके अलावा हर वस्तु में मिलावट का धंधा जोरों पर है खाद्य पदार्थ भी नकली और उन्हें खाकर बीमार होने पर हमें स्वस्थ करेंगी ये सोचकर जो दवाईयां खाई जा रही हैं वे भी नकली। पूरा समाज ही धोखाधडी के गहरे दल-दल में धस चुका है। समाज हमारे घर-परिवारों से मिलकर बनता है। यही बात चिंतनीय एवं विचारणीय है हम सब कहते हैं कि समाज बिगड़ रहा है, समाज में रहने वाली पुरातन पीढ़ी के साथ-साथ नव-पीढ़ी भी बिगड़ती जा रही है लेकिन यदि एक कम्पीटिशन एक ही मौहल्ले में रखा जाए जिनकी मानसिकता इस प्रकार की है कि हमारे मोहल्ले के बच्चे बिगड रहे हैं तो प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों को कम्पीटिशन में रखे गए अच्छे और बिगडे हुए बच्चों की कतार में से अच्छे, बच्चों की कतार में ही रखना पसन्द करेंगे क्योंकि प्रत्येक गृहस्थी या गृहस्थ का मुखिया या नव पीढ़ी चाहे लड़का हो या लड़की ये तो कहते हैं कि हमारे आस-पास माहौल बिगड़ गया है लेकिन कोई भी स्वयं को इसका जिम्मेदार नहीं मानता स्वयं को अच्छा समझने की भूल करता है यदि सभी अच्छे हैं तो बताओ माहौल कौन बिगाड़ रहा है। विचार करो, ये माहौल खराब करने वाले जैसा कि मैने पहले बताया है कहीं ओर से नहीं हमारे गृहस्थ घर से आते हैं इसलिए सारे बिगाड़ की जड़ को ही पकड़ना होगा क्योंकि जड़ को सींचने से ही वृक्ष फलता-फूलता है। सर्वप्रथम हमें समाज रुपी, वृक्ष की जड़ गृह को सींचना होगा। क्योंकि गृहस्थाश्रम को निर्वाह करने वाले गृहस्थी के ऊपर ही परिवार के सभी दायित्व होते हैं। शिवाजी, महाराणा प्रताप, बन्दा वैरागी जैसी शौर्य वीरता की गाथाएं हमें बताती है कि श्रेष्ठ संतानों को उत्पन्न कर हम इतिहास की विकृत धारा के प्रभाव को समाप्त कर सुकृत धारा का प्रवाह बना सकते हैं। गृहस्थाश्रम एक संयुक्त शब्द है-गृह+स्थ+आ+श्रम। गृह का अर्थ है 'घर', स्थ का अर्थ है 'स्थान', आ का अर्थ है 'चारों

तरफ से, श्रम का अर्थ है 'परिश्रम'। गृहस्थाश्रम या पारिवारिक दाम्पत्य जीवन जब संतुलित और सशक्त होता है, तो लोक-परलोक के सम्पूर्ण वैभव, सकल ऐश्वर्य, समस्त विभूतियाँ, सुख, आनन्द और सम्मान प्राप्त होते हैं। अतः सर्वप्रथम गृहों को संस्कारवान बनाना होगा। सुसंस्कृत घरों से ही संस्कारवान् आचार्य, अध्यापक मिलेंगे। सुसंस्कृत घरों के संस्कारवान बालक विद्यालयों में जाकर दिव्यजन बनकर निकलेंगे और पूर्वकाल में निकले भी, इसके उदाहरण इतिहास टटोलने पर सैकड़ों मिल जाएंगे। हमारे इतिहास में उत्तम सतंति का निर्माण करने वाले श्रेष्ठ गृहस्थी का उदाहरण तो योगेश्वर श्री कृष्ण और माता रूक्मिणी का है कहा जाता है दोनों ने श्रेष्ठ सतान की प्राप्ति के लिए 12 वर्ष तक एकान्त स्थान पर ब्रह्मचर्य का पालन कर तपश्चर्या की, तब प्रद्युम्न जैसी तेजस्वी और महाबली उत्तम संतान उन्हें प्राप्त हुई। इसी प्रकार वीर धनुर्धारी अर्जुन की दिव्य सतान वीर अभिमन्यु की शिक्षा मां के गर्भ से ही प्रारम्भ हो गई थी। त्रेता युग में महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया और कठोर तपस्या की जिसके फलस्वरूप राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जैसे वीर सुयोग्य सन्तानो का जन्म हुआ।

हम अपने परम पावन और प्रेरक इतिहास में वर्णित अनेक श्रेष्ठ परिवारों की विशेषताओं को ग्रहण कर आज की अनेक पारिवारिक समस्याओं को समाप्त कर सकते है। ऐसा कदापि न सोचे कि केवल उपदेशों और विद्यालयों में समस्या का समाधान हो सकेगा। जब तक प्रत्येक घर के चौबीसों घंटों के वातावरण को शुद्ध व संस्कारित नहीं किया जाएगा तब तक समाज से बुराई भ्रष्टाचार समाप्त नहीं हो सकेगा। प्रत्येक गृहस्थी को यह समझ लेना चाहिए कि अच्छे जनों का निर्माण, राष्ट्र और संसार का निर्माण घरों से ही होगा। इसलिए अच्छे गृहस्थ कैसे बने इस पर विचार करना होगा और उस पर आचरण करना होगा। व्यक्ति की उन्नति और विकास के लिए परिवार एक सामाजिक संस्था है। व्यक्ति का जीवन परिवार से बनता है। व्यक्ति की उन्नति के लिए उसके परिवार का वातावरण संस्कारित होना आवश्यक होता है। पारिवारिक वातावरण अच्छा होने से और कुटुंब के संस्कारित होने से गृहस्थ रूपी यह संस्था राष्ट्रीय उन्नति में सहायक होती है। इस सामाजिक संस्था का योग्य बनना हमारे लिए आवश्यक है क्योंकि इस संस्था से परिवार के सदस्यों का भविष्य जुड़ा होता है। परिवारों के स्वस्थ और निरोग होने से उसका असर अंततः समाज पर पड़ता है और समाज का राष्ट्र पर। सुखी गृहस्थी के बिना स्वस्थ समाज की कल्पना करना भूल होगी। हमारे आर्ष साहित्य गृहस्थ को चारों आश्रमों का आधार बताते हैं। जिस प्रकार सभी नदियाँ चलकर समुद्र में आश्रय पाती हैं उसी प्रकार सभी आश्रम गृहस्थाश्रम पर आश्रित रहते हैं। अगर गृहस्थाश्रम बिगड़ गया तो बाकी के सारे आश्रम भी बिगड़ जायेंगे। वेदों में निरन्तर सुखी गृहस्थ के लिए उपदेश दिया है। जब इस देश में वैदिक संस्कृति थी तब तक हमारे परिवार सुखी और समृद्ध थे। लेकिन आज के इस आधुनिक युग में हमारे परिवारों में अयोग्यता और भौतिक सुख साधनों की चाह होने से हम लक्ष्य से दूर हो रहे हैं। वैदिक संस्कृति से दूर होने के कारण हमारे परिवारों में विपरीत मान्यताएं, कुसंस्कार और कलह आ रहे हैं। इसलिए आज के अधिकतर परिवार दुःखी, कष्ट से पीड़ित दिखाई देते हैं। परिवार. में संगठन और एकता का अभाव होने से हमारे परिवार टूट रहे हैं। इसका दुष्प्रभाव हमारे समाज पर पड़ रहा है। समाज स्वस्थ और संगठित न होने का कारण हमारे उजड़े परिवार हैं। जब परिवार हमें योग्य, नागरिक देगा तभी तो देश उन्नति की राह पर बढ़ेगा। प्रत्येक परिवार का यह लक्ष्य होना चाहिए कि हम देश को योग्य नागरिक देंगे। अच्छे नागरिकों के द्वारा ही देश की प्रतिष्ठा विश्व में फैलती है। अच्छे नागरिकों का निर्माण परिवार और समाज की जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी को

झुठलाया नहीं जा सकता। सुखी गृहस्थी के निर्माण के लिए कुछ बातों की आवश्यकता होती है, इसकी चर्चा हम करेंगे। जिन पर अमल करने से हमारे परिवार सुखी और समृद्ध होंगे और राष्ट्र की उन्नति में सहायक होंगे।

**1. पति-पत्नी में विचारों की समानता**- पति-पत्नी गृहस्थाश्रम के मुख्य घटक हैं। इनका प्रभाव ही पूरे परिवार पर पड़ता है। अगर पति-पत्नी का परस्पर व्यवहार स्नेहपूर्ण होता है तो घर में आनंद का सागर उमड़ता है। पति-पत्नी में प्रेम का अटूट बंधन होने के लिए दोनों के विचारों की समानता आवश्यक होती है। जहाँ विचारों मे समानता होती है, वहाँ कलह और दुख: नहीं आ सकते।

**2. मधुर वाणी**- सुखी गृहस्थी के लिए मधुर वाणी का बड़ा महत्व है। जिस घर में मीठी वाणी का प्रयोग होता है उस घर के सभी सदस्य परस्पर संतुष्ट और प्रसन्न रहते हैं। परिवार के सभी सदस्य को आपस में मीठी वाणी के द्वारा बातचीत करनी चाहिए। कटु वाणी का प्रयोग करने से एक दूसरे के हृदय आहत होते हैं और प्रेम बंधन कमजोर होता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को बोलते समय विचार करके ही बोलना चाहिए क्योंकि एक बार बोलने के बाद पश्चाताप करने से कुछ प्राप्त नहीं होता। शरीर का घाव भर जाता है लेकिन वाणी का घाव भर नहीं सकता। इसलिए मीठी वाणी का प्रयोग करके परिवार के सुख को बढ़ाया जा सकता है।

**3. परस्पर समर्पण भाव**:- मैं और 'हम', जीवन के कोई साधारण शब्द नहीं है। इन दो शब्दों पर ही गृहस्थी की सारी सुख-शान्ति टिकी होती है। 'मैं' या 'मेरा'-एक ऐसी विचारधारा की ओर संकेत है, जहां आप, सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं। आपका व्यक्तित्व, सिर्फ अपने तक ही सिमटा होता है। आपका हर कदम, आपको अपने हित और अपने ही स्वार्थ की ओर ले जाता है। लेकिन, सबको साथ लेकर आगे बढ़ने का नाम है-'हम'। घरेलू जीवन का, पति-पत्नी के बीच रिश्तों का और सच्चे सुख का नाम है- हम। मैं नहीं, मेरा नहीं, बल्कि 'हमारा'। 'हम' और 'हमारा' सिर्फ शब्द न होकर एक एहसास है सबके करीब होने का। एक निश्चय है सबकी उन्नति और संरक्षण का। विवाह होने से पूर्व जब सगाई होती है तभी हमारा मन अपने स्वयं के बारे में न सोचकर अपने साथ जुड़ने वाले जीवनसाथी के बारे में सोचना शुरू कर देता है अर्थात् आप कुछ भी खाने से पहले उस व्यक्ति के बारे में सोचते हैं कि पता नहीं उन्होंने खाया होगा या नहीं और गृहस्थी के बाद जब बच्चे होते हैं और अगर आप उस समय बाजार में गए हों तो अवश्य ही मन में एक बार विचार आएगा कि बच्चों के लिए कुछ ले लूं या बच्चों को कुछ चाहिए तो नहीं। ढाई अक्षरों से अगर प्रेम का पाठ पढ़ाया जा सकता है, तो दो अक्षरोंवाले 'हम' से 'एकता' और 'विश्वास' का। जिन्दगी के ऐसे ही पाठों में छिपा होता है-गृहस्थी की सफलता का मूलमंत्र।

**4. सुप्रजा**- सुसंतान के द्वारा ही घर का यश बढ़ता है। संतान का अच्छा निकलना माता-पिता के लिए गौरव का विषय होता है। संतान का उत्तम होना माता-पिता के लिए जहाँ प्रमुख सुखों में माना जाता है। वहीं दूसरी ओर कुसंतान द्वारा वह अपमानित होते हैं। उनके परिवार की सुख शांति कुसंतान से नष्ट हो जाती है। संतान का बुरा निकलना मन को बड़ी पीड़ा देनेवाला होता है साथ में राष्ट्र के लिए भी बड़ा ही दुखदायी होता है। इसलिए वेद के इस उपदेश को समझे- **'मनुर्भव जन्या: दैव्यं जनम्'।** अर्थात् मनुष्य बनो और दिव्य गुण (राष्ट्र के हितकारी) संतान उत्पन्न करो। अत: प्रत्येक गृहस्थ का यह कर्तव्य बनता है कि वह अपनी संतान को सुसंस्कारित करने का भरसक प्रयत्न करे।

**5. धर्म परायणता**- धर्मपरायणता सुखी गृहस्थ का मुख्य तत्व है। धर्म के आचरण बिना सुखी गृहस्थ बनना संभव नहीं हो सकता। इसलिए घर के प्रत्येक व्यक्ति को धर्म का आचरण प्रयत्नपूर्वक

करना होगा। मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण (धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी: (बुद्धि), विद्या, सत्य, अक्रोध बताए हैं इनका पालन करना ही सच्ची धार्मिकता है न कि कोई पूजा पाठ या कर्मकाण्ड। जिसका व्यवहार और आचरण आदर्श है, वहीं सच्चे अर्थों में धार्मिक कहा जाना चाहिए। इस प्रकार का धार्मिक व्यक्ति अपने परिवार ही नहीं बल्कि समाज एवं राष्ट्र के लिए आदर्श साबित होता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति स्वयं ही बुरी लत में फंसा हो, अवगुणों की कीचड़ में धसा हो वह अपने परिवार तो क्या समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में घातक सिद्ध हो सकता है। अत: अच्छे गृहस्थी को राष्ट्रोन्नति में सहायक होने हेतु धार्मिक होना अनिवार्य है। इसीलिए वैदिक विचारधारा के अनुसार सभी को नित्य प्रति प्रात: सांय बैठकर अपने मन रूपी मन्दिर में विराजमान ईश्वरीय शक्ति का सानिध्य अर्थात् संध्या, हवन और ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना करनी चाहिए। ईश्वर की भक्ति करने से कुसंस्कार दूर होकर मन निर्मल होता है। घर में बड़े व्यक्ति का यह कर्तव्य बनता है कि वह छोटे बच्चों को ईश्वर उपासना के लिए प्रेरित करें। उपदेश करके उनके मन में रुचि बढ़ाए।

**6. आर्थिक संपन्नता:-** आर्थिक दृष्टि से संपन्न होना सुखी गृहस्थी के लिए महत्वपूर्ण है। आज का युग अर्थयुग है, इसलिए परिवार की सभी आवश्यकताएं पूर्ण करने के लिए हमें धन की आवश्यकता होती है। जहां आर्थिक समृद्धि है वहाँ सुख का निवास होता है। घर में किसी वस्तु का अभाव नहीं होना चाहिए। सभी सदस्यों की उन्नति और विकास के लिए आवश्यक साधन-सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। प्रत्येक सदस्य को उद्यम व परिश्रम द्वारा अपना योगदान परिवार की उन्नति के लिए देना चाहिए। सभी को मेहनत और पुरुषार्थ द्वारा अच्छे आय के स्रोत से धन कमाना चाहिए। आवश्यकता से अधिक धन की इच्छा व्यक्ति के सुख और शांति को नष्ट करती है। इसलिए व्यक्ति को अपने पुरुषार्थ और मेहनत से जो प्राप्त होता है उस पर संतुष्ट होना चाहिए।

**7. सयंमी जीवन:-** गृहस्थाश्रम का पालन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सयंमी जीवन जीना चाहिए चाहे वह स्त्री हो या पुरूष। योगेश्वर श्री कृष्ण की भांति आदर्श गृहस्थ का अनुसरण करने में प्रयत्नशील रहना चाहिए। जिस प्रकार उन्होंने गृहस्थ में रहते हुए भी ब्रह्मचर्य (इन्द्रिय संयम, ब्रह्म में विचरण) का पालन कर जीवनयापन किया। उसी प्रकार सभी को समाज व राष्ट्र के समक्ष सद् गृहस्थ का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। जिससे लोग आपका अनुसरण करें।

अंतत: इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि जहां पर प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे पर संतुष्ट होकर प्रेमपूर्वक संवाद स्थापित कर आनंदपूर्वक विचरते हैं, वह घर सचमुच धरती पर स्वर्ग है। जिस राष्ट्र की माटी से हमारा शरीर बना है, जिसका अन्न खाकर हम पले-बड़े हुए हैं उसकी उन्नति के लिए, उसके गौरव के लिए हमारा परमकर्तव्य कि हम अपने गृहस्थ आश्रम को संवारे तभी राष्ट्र उन्नति कर सकता है। ऐसा तभी संभव है जब हम वैदिक विचारधारा अपने जीवन में अपनाएंगे और तदनुकूल आचरण करेंगे।

जनहित में- **डॉ. गंगा शरण आर्य 'साहित्य सुमन' (डी. एन. वाई. एवं मास्टर कॉस्मिक हीलर) (चरित्र-निर्माण मण्डल) सैनी मोहल्ला, ग्राम शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61 मो. 9871644195**

**सौजन्य:** श्रीमति शशि सैनी एवं श्री जीत सिंह सैनी, शाहबाद मोहम्मद पुर, नजदीक सैनी शिव मन्दिर, नई दिल्ली-61

**आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है।**
**- विक्रम देव आर्य**

# पापों से बचें

- मृदुला अग्रवाल

मनुष्य अपने सन्मुख जगद्रक्षक परमात्मा को साक्षात् जानकर ''पापों से बचें'' और सब प्राणी अज्ञान तथा वैर छोड़कर परस्पर मित्रवत् रहें। ''पाप के त्याग से सुखलाभ होता है।''प्रत्येक मनुष्य को ऋषि, मुनि, धर्मात्माओं आदि के अनुकरण से वेदज्ञान प्राप्त करके पापों का नाश करना चाहिए। पाप को छेदने में समर्थ परमेश्वर ने वेदज्ञान दिया भी इसलिए है।

''मनुष्य वेदज्ञान प्राप्ति से ऐसा प्रयत्न करे कि आत्मिक, शारीरिक और दैवी विपत्तियों एवं मूर्खो के दुष्ट आचरणों से पृथक रहे तथा न कभी कोई पाप करे, जिससे परमेश्वर वा राजा उसे दण्ड न देवें, किन्तु सुशीलता के कारण संसार के सब पदार्थ आनन्दकारी हों।''

-अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-10, मन्त्र-1

जो विभिन्न पीड़ाओं से, ज्वर आदि रोगों से पापियों को दण्ड देता है, उस न्यायी जगदीश्वर का स्मरण करते हुए हम पापों से बच सकते हैं। जैसे, मलिन वस्त्र जल से शुद्ध होते हैं, वैसे ही पापी मनुष्य भी ब्रह्मज्ञान द्वारा पापों से छूटकर शुद्धात्मा हो जाते हैं। वे पापकर्म छोड़ने से सर्वहितकारी, विशाल समुद्र के समान गम्भीर परमेश्वर के कोप से डरकर पाप न करके, परमात्मा के उपकारों को विचार कर उपकारी बनकर जीवन भर आनन्द भोगते हैं। परमेश्वर अपने सर्वज्ञापन से पापी को उसके कर्मानुसार फल देते हैं। कुपथ पर चलने वाले पापी को दुःख और सुपथ पर चलने वाले लोगों को ईश्वर के रचे पदार्थ सुख प्रदान करते हैं। ''पाप'' पृथ्वी की आकर्षण शक्ति की तरह वापस उसी व्यक्ति पर गिरता है जो पाप करता है। ''अहंकार सब पापों का मूल कारण होता है।'' स्वयं की प्रशंसा करना घृणा उत्पन्न करता है, जबकि विनम्र एवं मर्यादित व्यक्ति श्रद्धा का पात्र होता है एवं सबका मित्र होता है। प्रभु, एक कीड़े को, जो कि प्रभु प्रशंसा भी नहीं कर सकता, सहायता करता है-सुख देता है। जो आसुरी प्रकृति के लोग हैं, जो उस हितैषी परमात्मा में भी दोष देखते रहते हैं, उनको भी सुखमय जीवन दे देता है तो भक्तों को तो अपना आशीर्वाद दे ही देता है। वह स्वयं सत्य भक्ति को स्वीकार कर सबको यथार्थ आनन्द देता है। ''अज्ञानता एक परोपकारी व्यक्ति को भी घमण्डी बना देती है।'' पापियों से भी अधिक पाप करने वाला व्यक्ति अगर ज्ञानरूप यज्ञ में श्रद्धा से समागत हो जावे तो वह निःसंदेह सम्पूर्ण पापों से अच्छी प्रकार तर जायेगा, क्योंकि ज्ञानरूपी अग्नि सम्पूर्ण पाप कर्मो को भस्ममय कर देती है। ज्ञान के द्वारा संशय खत्म होने से पाप नष्ट हो जाते हैं और वह व्यक्ति शीघ्र ही परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।

''हे परमेश्वर! हे सुभग! तू हमारे मन को धर्मानुकूल करके कल्याणपूर्ण बना, जिससे हम अज्ञान के विनाश करने और पाप-पुण्य के संग्रामों में पाप को दबाने में समर्थ होवें। हमारे काम-क्रोध ादि शत्रुओं की सेना को तो अवनत कर हम अपने मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए तुझे भजते हैं।'' -सामवेद, मन्त्र-1560 एवं ऋग्वेद, मंडल-8, सूक्त-16, मन्त्र-20 पाप करने वाले चोरों को, जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को पीड़ा व कष्ट पहुँचाते हैं, राजधर्म और प्रजा मार्ग से दण्डित कर, शिक्षा देकर श्रेष्ठ स्वभाव युक्त करें। ''दूसरे के पदार्थ हरणरूप पाप से एवं अन्याय से दूसरे के पदार्थ को खाने वाले पाप से निरन्तर स्वयं की रक्षा करें। नीति और दण्ड के भय से सब मनुष्यों को पाप से हटा धार्मिक विद्वानों की सेवा करके, प्रजा में ज्ञान, सुख और अवस्था बढ़ाने के लिए सब प्राणियों को शुभगुणयुक्त सदा किया करें।''- ऋग्वेद, मंडल-1, सूक्त-36, मन्त्र-14।।

यज्ञ से शेष बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूटते हैं और जो पापी लोग अपने शरीर-पोषण के लिए ही पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं।-भगवद् गीता, अध्याय-3, श्लोक-13

जिस मनुष्य ने अन्त:करण को जीतकर, आसक्ति-रहित संपूर्ण भोग-सामग्री को त्याग दिया है, शरीर-सम्बन्धी कर्म करते हुए भी उसको पाप नहीं प्राप्त होता है। जो परिवार को महत्व देता है, अपने बच्चों को प्यार करता है, सामान्यत: वह पाप नहीं करता। पारिवारिक दायित्वों को महत्व न देने वाले व्यक्ति पाप-वासना में बह जाते हैं। अपने मन को अच्छे कर्म में लगाने वाल व्यक्ति, जैसे-ईश्वर की भक्ति, भजन, सत्संग आदि, पाप-कर्म नहीं करता। मुसलमान एवं ईसाईयों में तो पाप क्षमा होने का प्रचलन है-पाप किया-मस्जिद या गिरजाघर में जाकर माफी मांग ली और मिल गई पाप से मुक्ति। हम हिन्दुओं में भी आजकल यह प्रचलन घर कर गया है-जैसे मंदिरों में दर्शन से, तीर्थ-स्थान पर जाकर, गुरु के द्वारा, पूजा-पाठ से, गंगा-स्नान आदि से पाप क्षमा होने का प्रचलन। ईसाई सिद्धान्तों की तो सीधी घोषणा है- "We are born sinners" हम जन्म से पैदाईशी पापी हैं। इसके विपरीत हमारे परमेश्वर हमें आत्मज्ञान देते हैं, कहते हैं यह शरीर नश्वर है- भस्मान्त है, आत्मा अमर है-अमृत है। आत्मा के सत्य में श्रद्धा स्वत: ही होने लगती है। स्वामी दयानन्द जी ''सत्यार्थ-प्रकाश'' में लिखते हैं कि ''मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है।'' सब प्रकार के सुख के विस्तार के लिए, सब मनुष्यों को सत्य मार्गगामी बनना चाहिए। आत्मा का बल सबसे बड़ा बल है। शरीर बलवान् होना चाहिए। निर्बलता पाप है। आदर्श, अनुशासन, पारस्परिक स्नेह सामाजिक बल है। परमेश्वर का शासन प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप है। वास्तविकता में यदि पाप-कर्म किया है तो उस व्यक्ति को दण्ड अवश्य मिलेगा। 'इस जन्म में फल नहीं मिला तो मरकर कर्मो का फल अवश्य मिलेगा' मन में इस विचार को रखते हुए मनुष्य मन, वाणी और शरीर से सदा शुभ कार्य ही करे। जिन महात्मा एवं आप्त ऋषियों के मानसिक, वाचिक और कायिक कर्म संसार के दु:ख दूर करने के लिए होते हैं, उनके उपदेशों को सब मनुष्य सदा पुरुषार्थी होकर प्रीतिपूर्वक हृदय में ग्रहण करें या धारण करें तो कभी मानसिक पाप उदय ही न हो। मानसिक-पाप जब मन में उदय होता है और शरीर द्वारा कार्यान्वित होता है तब वह अपराध गुनाह हो जाता है। अपराध अदृश्य होता है और फैल जाता है और पाप दृष्टिगोचर हो जाता है। अपराधी दूसरे को यातना देता है, आतंक फैलाता है। अपराध अगर माता-पिता, पुत्र, आचार्य वा मित्र किसी ने भी किया हो तो उसे अपराध के अनुसार ताड़ना अवश्य देनी चाहिए। गुणी व्यक्ति के पास जाकर वह स्वयं को सुधार लेता है तो ठीक है, नहीं तो वह अपराधों को बार-बार दोहराता रहता है। दोहराने से वह अपराध या पाप हमसे दूर नहीं होता वरंच अन्त:करण में स्थान पा लेता है। ''जो लोग पापमय जीवन व्यतीत करते हैं, परमात्मा उनकी वृद्धि कदापि नहीं करता। यद्यपि पापी पुरुष भी कहीं-कहीं फलते-फूलते हुए देखे जाते हैं, तथापि उनका परिणाम अच्छा कदापि नहीं होता। अन्त में जिस ओर धर्म होता है उसी पक्ष की जय होती है। इस तात्पर्य से मन्त्र में यह कथन किया है कि परमात्मा पापी पुरुष और उनका अनुमोदन करने वाले दोनों का नाश करता है-''ऋग्वेद, मंडल-9, सूक्त-24, मन्त्र-7 आत्म-उत्थान के इच्छुक व्यक्ति को तामसी, राजसी लोगों की कभी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए, न ही उनके कार्यों का अनुकरण करना चाहिए, क्योंकि इनका सम्मान करने से पाप का बीज हृदय में अंकुरित हो जाता है और अनुकूल परिस्थिति के होते ही साधक का पतन करने में सहयोगी बन जाता है। ''पाखण्डियों अर्थात् वेदविरोधियों, अपराधियों अथवा शास्त्रोक्त निर्धारित कर्त्तव्यों के विरूद्ध चलने वाले विडाल वृत्ति वालों (छिपकर घात करने वालों) छली-कपटी आदि मनुष्यों का वाणी मात्र से भी सत्कार नहीं करना चाहिए।''-मनुस्मृति, अध्याय-4, श्लोक-30

उपरोक्त दुष्टों से बचकर प्रभु का गुण-कीर्तन, उपासना से साधक देव बन जाते हैं। जीवन का चालू रहना एक सहारा है, परन्तु स्थायी सहारा तो परमेश्वर का ही होता है। प्रभु ने हमारे लिए कुछ

नियम बनायें हैं। जैसे, वृक्षों को काटने आदि में हिंसा तथा हिंसाजन्य पाप नहीं होता। पाप न होने का दूसरा कारण यह भी है कि उनके फल आदि का भक्षण करना ईश्वरीय व्यवस्था है और ईश्वरीय व्यवस्था तथा नियमों के पालन में कभी पाप नहीं होता बल्कि हम ज्यादा आनन्द में रहते हैं। वेदों की नियम-व्यवस्था एवं प्रभु का अनुकरण करना ही दु:खों का हटाना एवं सुख पाना हैं, जो पाप विश्वासघात से, घृणा से, अपवाद से, असत्य व्यवहार से हम कर बैठते हैं और जो पाप हम सोते हुए वा जागते हुए करते हैं, न्यायकारी परमेश्वर, संपूर्ण ऐश्वर्य वाला जगदीश्वर, ज्ञानियों का हितकारी, बड़ी बुद्धि वाला, परमात्मा उस पाप से होने वाली दुर्गति से हमें बचावे एवं हमें ऐसे दुष्कर्मों से दूर रखे। ''किसी मनुष्य को कुटिलगामी सर्प आदि दुष्ट जीवों के समान धर्ममार्ग में कुटिल न होना चाहिए, किन्तु सदा सर्वदा सरल भाव से ही रहना चाहिए।'' -यजुर्वेद, अध्याय-6, मन्त्र-12

पाप से घृणा करने वाला ही धर्म की तरफ आकृष्ट होता है, पाप को अच्छा मानने वाला कमी धर्मी नहीं बन सकता। धार्मिक मनुष्य ही परमात्मा के कृपापात्र होकर सदा विजय को प्राप्त करते हैं, दुष्ट नहीं। परमात्मा भी धार्मिक मनुष्यों को ही आशीर्वाद देता है, पापियों को नहीं। परलोक अर्थात् परजन्म के सुखार्थ धर्म का संचय करें, क्योंकि परलोक में सिर्फ धर्म एवं सत्य ही सहायक होता है, जिसका धर्म-सत्य से, कर्त्तव्य-पालन से, पाप दूर हो गया हो, उसको प्रकाशस्वरूप, परमदर्शनीय परमात्मा की प्राप्ति होती है, जोकि मानव-जीवन के लिए एक अमूल्य निधि है। अपनी त्रुटि के लिए दु:ख अनुभव करते हुए पश्चाताप से पाप क्षय तो नहीं होता, परन्तु पाप करने वाले व्यक्ति को पाप-फल से तो नहीं (क्योंकि ईश्वर के न्याय में क्षमा का स्थान नहीं है) अपितु पाप-भावना से मुक्ति मिल जाती है। आगे के लिए भविष्य में पाप नहीं किये जाने के दृढ़संकल्प ही मनुष्य को निष्पापता की ओर अग्रसर करता है और वह मनुष्य पवित्र हो जाता है।

- 16 सी, सरत बोस रोड,
कोलकाता-700020, मो-9836841051


# आंखों का फ्री जांच

## आंखों की समस्या, बीमारियां निदान और बचाव

1. जन्म के समय एक आंख में पानी आना, एनएल ब्लॉक, दवाईयां व ऑपरेशन कन्जैनिटल, कैटेरेकट, जन्म का मोतियाबिना- ईलाज ऑपरेशन (SQUINT) भैंगापन- ईलाज चश्में व ऑपरेशन।
2. स्कूल के समय मायोपिया या हाईपरमैट्रोपिया- ईलाज चश्मा।
3. चश्मा हटाने का लेसिक लेजर 18 वर्ष से 50 वर्ष तक किया जाता है।
4. 40 वर्ष पर प्रेशबायोपिया (नजदीक का चश्मा) ईलाज चश्मा नजदीक का
5. 50-60 वर्ष-मोतियाबिन्द या कैटेरेकट- ईलाज दवाईयां व आपरेशन
6. 50-60 वर्ष या पहले भी किसी को काला मोतिया यानि ग्लोकोमा हो सकता है। ईलाज दवाईयां
7. बी.पी. व शुगर के मरीज में रेटिनोपैथी यानि रेटीना (आंख के परदे में खून के छोटे-छोटे धब्बे बन जाते है।) ईलाज लेजर द्वारा।

**स्थान- आश्रम-आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, हरियाणा**

**दिल्ली रोड़, मेट्रो पीलर नम्बर 819 के सामने**

**समय- रोजाना 1.00 बजे से 2 बजे आंखों की फ्री जांच की जाती है।**

# बहुगुणी मूली

***मूली में प्रोटीन, कैल्शियम, गंधक, आयोडिन तथा लौह तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते है, इसमें सोडियम, फास्फोरस, क्लोरिन तथा मैग्नीशियम भी है, मूली विटामिन ए का खजाना है, विटामिन बी और सी भी इससे प्राप्त होते हैं, सामान्यतः लोग मोटी मूली पसंद करते है, कारण उसका अधिक स्वादिष्ट होना, छोटी-पतली और चरपरी मूली भी उपयोगी है। ऐसी मूली त्रिदोष नाशक है, इसके विपरीत मोटी मूली त्रिदोष कारक मानी गई है।***

**-डॉ. एम.सी. वार्ष्णेय**

**मूली** का रंग सफेद है, परन्तु यह शरीर को लालिमा प्रदान करती है, भोजन के साथ या भोजन के बाद इसे खाना विशेष रूप से लाभदायक है। मूली और इसके पत्ते भोजन को ठीक प्रकार से पचाने में सहायता करते है। वैसे तो मूली के पराठे, रायता, अचार तथा भुजिया जैसे अनेक स्वादिष्ट व्यंजन बनते हैं परन्तु प्रतिदिन एक मूली खाने से व्यक्ति अनेक बीमारियों से मुक्त रह सकता है।

**मूली** में प्रोटीन, कैल्शियम, गंधक, आयोडिन तथा लौह तत्व पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं, इसमें सोडियम, फास्फोरस, क्लोरिन तथा मैग्नीशियम भी है, मूली विटामिन ए का खजाना है। विटामिन बी और सी भी इससे प्राप्त होते हैं। हम जिसे मूली के रूप में जानते हैं, वह धरती के नीचे पौध की जड़ होती है। धरती के ऊपर रहने वाले पत्ते मूली से भी अधिक पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। सामान्यतः हम मूली को खाकर उसके पत्तों को फेंक देते हैं, इसके पत्तों का भी सेवन करना चाहिए। मूली के पौधे में आने वाली फलियाँ-मोगरी भी समान रूप उपयोगी और स्वास्थ्यवर्धक हैं। सामान्यतः लोग मोटी मूली पंसद करते हैं कारण उसका अधिक स्वादिष्ट होना, परन्तु छोटी-पतली और चरपरी मूली अधिक उपयोगी है। ऐसी मूली त्रिदोष नाशक है। इसके विपरीत मोटी मूली त्रिदोष कारक मानी गई है।

सलाद में इसका नित्य सेवन करें, तो अजीर्ण ठीक हो जाएगा। पके टमाटर, मूली तथा ककड़ी का मिश्रित सलाद स्वादिष्ट, रूचिकर सस्ता, पाचक और पौष्टिक होता है। अनेक प्रकार के उदर के रोग और उसके कष्टों से छुटकारा पाने के लिए

चटपटे, जायकेदार, आकर्षक मूलीयुक्त सलाद को अपनाइए।

मूली का रस और गाय का घी 2-2 तोला मात्रा में मिलाकर चाटने से बवासीर में लाभ होता हे। मूली को पीस कर इसकी लुगदी को पुलटिस की तरह बवासीर के मस्से पर रखकर कपड़े से कसकर बाँध लें और थोड़ी देर बाद कपड़ा गरम कर, इस पर सेकें। मूली के बीज चार चम्मच, दो कप पानी में डालकर उबालें, जब आधा कप बचें, तब उतार कर छान लें और पी जाएँ, कुछ दिन तक सेवन करने से **मूत्राशय** की **पथरी** गलकर निकल जाती है।

**अम्लपित्त** को दूर करने के लिए ताजी मूली के टुकड़े, पिसी हुई मिश्री के साथ खाने से लाभ होता है। **पीलिया और यकृत रोगों में** कच्ची मूली का नियमित सेवन करना चाहिए, इससे मूत्र द्वारा शरीर के विजातीय द्रव्य तथा विषाणु धीरे-धीरे बाहर निकल जाते हैं।

दो चम्मच मूली का ताजा रस निकाल कर सुबह, दोपहर, शाम लेने **पेशाब की जलन, रूकावट और मूत्र मार्ग की व्याधियाँ** शीघ्र ही

दूर हो जाती है। मूली शरीर से **विषेली गैस** को निकालकर जीवनदायी ऑक्सीजन प्रदान करती है। यह हमारे **दाँतों को मजबूत** करती है तथा **हड्डियों को शक्ति** प्रदान करती है। इसके सेवन से व्यकित की **थकान मिटती** है और अच्छी नींद आती है। मूली से **पेट के कीड़े** नष्ट होते हें तथा **पेट के घाव** भी ठीक होते हैं, यह **उच्च रक्तचाप** को नियंत्रित करती है तथा **बवासीर** और **हृदय रोग** को शांत करती है।

**पीलिया रोग** में भी मूली लाभ पहुँचाती है। अफारे में मूली के पत्तों का रस विशेष रूप से उपयोगी होता है। इसके रस में थोड़ा नमक और नींबू का रस मिलाकर पीने से मोटापा कम होता है और शरीर सुडौल बन जाता है। पानी में मूली का रस मिलाकर सिर धोने से जुएं नष्ट हो जाती है। विटामिन एक पर्याप्त मात्रा में होने से मूली का रस **नेत्र की ज्योति** बढ़ाने में भी सहायक होता है। मूली का नियमित सेवन पौरुषत्व में वृद्धि करता है, गर्भपात की आशंका को समाप्त करता है और शरीर के जोड़ों की जकड़ने दूर करता है।

**सर्दी जुकाम** तथा **कफ-खांसी** में भी मूली फायदा पहुँचाती है। इन रोगों में मूली के बीज का चूर्ण विशेष लाभदायक होता है। इसके बीजों को उसके पत्तों के रस के साथ पीसकर यदि लेप किया जाए तो अनेक चर्म रोगों से मुक्ति मिल सकती है। इसके रस में तिल्ली का तेल मिलाकर और उसे हल्का गर्म करके कान में डालने से **कर्णनाद, कान का दर्द** तथा **कान की खुजली** ठीक होती है।

इसके पत्ते चबाने से **हिचकी** बंद हो जाती है। मूली और इसके पत्ते तथा जमीकंद के कुछ टुकड़े, एक सप्ताह तक काँजी में डालें, उसके सेवन से बढ़ी हुई तिल्ली ठीक होती है और बवासीर का रोग नष्ट होता है। हल्दी के साथ मूली खाने से भी बवासीर में लाभ होता है। इसके पत्तों के चार तोले रस में तीन माशा आजमोद का चूर्ण और चार पत्ती जोखार मिलाकर दिन में दो बार नियमित, एक सप्ताह तक लेने से गुर्दे की पथरी गल जाती है।

एक कप मूली के रस में एक चम्मच अदरक और एक चम्मच नींबू का रस मिलाकर नियमित **सेवन करने से भूख बढ़ती है तथा** पेट संबंधी सभी रोग नष्ट होते है। मूली के रस में समान मात्रा में अनार का रस मिलाकर पीने से रक्त में **हीमोग्लोबिन** बढ़ता है और रक्ताल्पता दूर होती है। सूखी मूली का काढ़ा बनाकर उसमें जीरा और नमक डालकर पीने से **खाँसी** और **दमा** में राहत मिलती है। मूली सौन्दर्यवर्धक भी है। इसके प्रतिदिन सेवन से रंग निखरता है, खुश्की दूर होती है, रक्त शुद्ध होता है और चेहरे की झाइयां, कील तथा मुँहासे आदि साफ होते हैं। नींबू के रस में मूली का रस मिलाकर चेहरे पर लगाने से चेहरे सौन्दर्य निखरता है।

– 90 शक्ति विहार, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034, मो. 9810003173

**साधना के इच्छुक सम्पर्क करें**

**आत्म- शुद्धि- आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा।**

**इच्छुक साधक-साधिकायें सम्पर्क करें।**

**–व्यवस्थापक,**
**चलभाष: 9416054195**

# टिप्पा-टिप्पा टिप्स

- नहाने से पहले सरसों के तेल से त्वचा की मालिश करें, दिन में कम से कम 2-3 बार आंखों में पानी के छींटे मारें। चेहरे पर साबुन न लगाएं। इसकी जगह दही-बेसन, चोकर व मुलतानी मिट्टी का प्रयोग करें। नीम की पत्तियों को पानी में उबाल लें, फिर इसे नहाने के पानी में मिलाकर नहाएं इससे त्वचा के जीवाणु नष्ट होते हैं।
- प्रदूषण भरे वातावरण में डैड सेल्स की समस्या आम है। एक्सफोलिएट यूज करने से त्वचा के डैड सेल्स निकल जाते हैं और त्वचा रेशम-सी कोमल व चमकदार हो जाती है। डैड सेल्स को हटाने के लिए माइक्रोडमब्रिजन और ग्लाइकोलीक पील्स ट्रीटमेंट करा सकती हैं।
- अनार का सेवन रक्त बढ़ाने से लेकर एजिंग रोकने जैसे कई फायदों से भरा है, अनार के सेवन से हेपेटाइटिस सी जैसे गंभीर वायरस संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है। अनार में मौजूद तीन तत्व पुनिकालिन, पुनिकैलाजिन और एलैजिक शरीर में एंटी एचसीवी तत्व बढ़ाते हैं, जिससे वायरस से लड़ने में मदद मिलती है, अनार का सेवन लिवर के लिए हमेशा से फायदेमंद माना जाता है।
- खाँसी व दमा में छाती और पीठ पर कलौंजी के तेल की मालिश करें, तीन बड़े चम्मच तेल रोज पीएँ और पानी में तेल डालकर उसकी भाप लें।
- उदासी और सुस्ती मिटाने के लिए एक गिलास संतरे के रस में एक बड़ा चम्मच कलौंजी तेल डालकर 10 दिन तक सेवन करें।
- डायबिटीज में एक कप कलौंजी के बीज, एक कप राई, आधा कप अनार के छिलके और आधा कप पित्तपापड़ा को पीसकर चूर्ण बना लें। आधा चम्मच कलौंजी के तेल के साथ नाश्ते के पहले एक महीने तक लें।
- गुर्दे की पथरी के लिए पावभर कलौंजी को महीन पीसकर पावभर शहद में अच्छी तरह मिलाकर रख दें। इस मिश्रण का दो बड़े चम्मच एक कप गर्म पानी में एक छोटे चम्मच तेल के साथ अच्छी तरह मिलाकर रोज नाश्ते के पहले पीएँ।
- सुन्दर चेहरे के लिए एक बड़ा चम्मच कलौंजी का तेल एक बड़े चम्मच जैतून के तेल में मिलाकर चेहरे पर मलें और एक घण्टे बाद चेहरे को धो लें। कुछ ही दिनों में चेहरा चमक उठेगा।
- त्वचा की झुर्रियाँ मिटाने में शहद बहुत सहायक है। शहद की पतली-सी परत चेहरे पर लगाएँ तथा 15-20 मिनट बाद धो लें, तैलिय त्वचा वाले शहद में कुछ बूंदें नींबू की डाल सकते हैं।
- वजन कम करने के लिए कच्चे या पके हुए पतीते का सेवन खूब करना चाहिए। पपीते के प्रयोग से शरीर में अतिरिक्त चर्बी नहीं जमती और वजन तेजी से घटता है।
- हल्दी, मैथी तथा सौंठ बराबर मात्रा में लेकर पीस लें यह चूर्ण प्रतिदिन 1-1 चम्मच की मात्रा में सुबह-शाम गुनगुने पानी से लेने से घुटनों का दर्द ठीक होता है।
- गेंदे के फूलों में एक विशेष प्रकार की गंध होती है, मच्छरों को दूर रखने हेतु घर में गमलों अथवा क्यारी में गेंदे के पौधे अवश्य लगाएँ।
- प्रात: काल खाली पेट 5-10 ताजा तुलसी के पत्ते पानी के साथ लें, इसमें प्रचुरमात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, यह प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर सर्दी जुकाम, बुखार से लेकर, कैंसर तक में लाभकारी है।
- अजवाइन एंटीबेक्टीरियल और एंटीऑक्सीडेंट होती है 50 मिलिलीटर तिल के तेल में 10 ग्राम अजवाइन मिलाकर उबाल लें, ठण्डा होने पर इससे जोड़ों की मालिश करने से दर्द में आराम मिलता है। अजवाइन और दानामेथी को 20-20 ग्राम की मात्रा में लेकर पीस लें। इस मिश्रण को एक कपड़े में बांधकर पोटली बना लें और तवे पर सहने योग्य गर्म करके दर्द वाले जोड़ पर सेक करने से लाभ होगा। एक चम्मच अजवाइन को थोड़े पानी में उबालें, इस पानी से एक कपड़ा भिगोएं, प्रभावित हिस्से पर रखें, आराम मिलेगा।
- नागरबेल के पत्ते पर एरंड का तेल लगाकर और उसे थोड़ा सा गर्म करके छोटे बच्चों की छाती पर रखकर गर्म कपड़े से हल्का सेंक करने से बालक की छाती में जमा कफ पिघलकर निकल जाता है।

# भाई हो भरत जैसा

–डॉ. विनयकुमार 'विष्णुपरी'

आज लेखक का बड़ा ही सुन्दर और अति प्रसन्नता का दिन हैं। लेखक के दोनों पुत्र सोनू, पोता-भास्करचन्द्र, विनी उर्फ ईसू शाम सात बजे लेखक के कक्ष में प्रवेश करते ही सामने आकर खड़ा हो गया था। कहा? पिताजी, दादाजी आप आजकल रोज-रोज छोटी-छोटी मनोरंजक कहानियाँ लिखते है, कई पत्र-पत्रिकाओं में मैं देखता हूँ कि आपकी कहानियों के साथ फोटो, पता-चलन्त दूरभाष संख्या भी छपा रहता है।

सोनू ने कहा, मैं, मेरे पुत्र और मेरे छोटे भाई ने आप से एक कहानी सुनने का मन बनाया है। आज आप का नाम कवि-पाठ में, और बारह जून बीस सौ पन्द्रह की संस्कार सारथी, दिल्ली की पत्रिका एवं हिन्दी की एक पुस्तक में 'दयालू शीलनाम' शीर्षक से छपा है, जिसे डाकिया दे गया है। मैंने उसे पढ़ा है और आप मुझे एक भी कहानी नहीं सुनाते।

अच्छा बेटा, तुम एक कहानी आज सुन ही लों। इस कहानी के तुम अपने जीवन में जरूर इस्तेमाल कर देखना। तुम्हें क्या लाभ-हानि होती है। मैं समझता हूँ कि तुम्हें जरूर लाभ के सिवा कोई हानि न होगी।

मुँह लटकाए अयोध्या की ओर सुमंत लौट रहे हैं। लगता है, यह कुछ चुरा कर अपने घर वापस हो रहे हैं। रथ घोड़े के मन से रास्ते पर चल रही हैं। सुमंत का खाली सवारी देखी तो राज्यवासियों ने उन्हें घेर लिया, हमारे राम को तुम कहाँ छोड़ आये हो? राजमहल में। दशरथ ने प्रश्नों की बौछार कर दी, 'मेर राम कहाँ हैं। बेटी सीता कैसी है?' दशरथ बच्चे की भांति जोर-जोर से रोने लगे, बिलखने लगे। सुमंत ने आँसू बहाते-बहाते सारी बात कह डाली।

पुत्र-शोक से राजा दशरथ के प्राण-पखेरू उड़ गये। राम के वियोग में वे उसे कहाँ तक अपनी जर्जर देह पिंजरे में कैद रखते? भरत-शत्रुघ्न ननिहाल से बुलाये गये। भरत का आगमन सुनकर कैकेयी निहाल हो उठी। उसने सारी घटनाओं को हँसते-हँसते सुना दिया और कहा-'बेटा, अब राज-सिंहासन पर बैठो। मैंने यह सब तुम्हारे लिए ही किया है।'

भरत को सुनते ही काठ मार गया। ये क्रूध होकर बोले, अरे नागिन? तूने यह क्या कर डाला? वर मांगते समय तेरे मुँह में कीड़े क्यों नहीं पड़ गये? तुम मुझे जनमते ही जहर क्यों नहीं दे दिया था? कम से कम मेरे कारण मेरे पिता और भाभी की आज यह हालत न होती। भरत माँ कौशल्या के पास गये और उनसे लिप्ट कर रोने लगे, माँ भी पछाड़ खाकर गिर पड़ी? सारे राजमहल में शोक की लहर दौड़ पड़ी।

राजा दशरथ का अंतिम-संस्कार कर चतुरँगिनी सेना, माताएँ, गुरु मंत्री, प्रजा-जन आदि सबको लेकर भरत राम को लौटाने चित्रकूट की ओर चल पड़े। भरत-शत्रुघन ने राम लक्ष्मण की तरह ही बिल्कुल जोगिया वस्त्र पहने और बरगद के दूध से शिर केश को जटा बनाकर पूरे समाज के साथ गंगा को पार किया। चित्रकूट निकट आ गये। भरत की सेना को देखकर सब पशु-पक्षी भयभीत होकर इधर-उधर भागने लगे। राम ने आकाश में धूल उड़ती देखी तो लक्ष्मण से इसका पता लगाने को कहा। ऊँचे पेड़ पर चढ़कर लक्ष्मण ने भरत को सेना सहित आते देख लिया वे राम से बोले, भैया! लगता है, भरत हमें जंगल में भी आराम से नहीं रहने देगा। आज मैं सब से बदला लेकर दिल की आग बुझाऊँगा। राम ने लक्ष्मण को समझाया और धीरज रखने की सलाह दी।

भरत आते ही राम के चरणों में गिर पड़े और फूट-फूट कर रोने लगे। राम ने भरत को उठाकर गले से लगा लिया। दोनों की आँखों से गंगा, यमुना प्रवाहित होने लगी। भरत ने सीता को प्रणाम किया और लक्ष्मण को गले से लगा लिया। फिर शत्रुघ्न, माताएँ, गुरु आदि भी सबसे मिले। राम पिता की मृत्यु का समाचार सुन हतप्रभ हो गये। शोक का समुद्र फिर लहरें मारने लगा।

दूसरे दिन भरत ने अपने एवं माँ के अपराधों की क्षमा मांगतें हुए राम से अयोध्या लौट चलने की प्रार्थना की। राम ने कहा, ''भाई जो कुछ हुआ, उसमें किसी का भी दोष नहीं है। सब कर्मों का फल है। तुम राज्य करो, मैं वन में रहूँगा। पिता का वचन सत्य सिद्ध हो,

**( शेष पृष्ठ 28 पर )**

# आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री राजपाल जी समाजसेवी, निठारी दिल्ली
2. श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी, लाजपत नगर, दिल्ली
3. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
4. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि.
5. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
6. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
7. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
8. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
9. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
10. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
11. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
12. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
13. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
14. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
15. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21 अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री मास्टर सन्तलाल जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
59. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
60. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
61. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
62. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
63. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
64. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
65. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
66. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
67. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
68. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
69. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
70. श्री रवि कुमार जी आर्य, एच.एल सिटी, बहादुरगढ़
71. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड़, बहादुरगढ़
72. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, डी-204, हेरिटेज मैक्स, सैक्टर-102, गुरुग्राम, हरियाणा
73. श्रीमती रीटा चड्डा, डी-204, हेरिटेज मैक्स, सैक्टर-102, गुरुग्राम, हरियाणा
74. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
75. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा
76. श्री मुकेश कुमार जी सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी हरेवली, दि.

# तांत्रिकों का खौफ- हमारा भ्रम

–डॉ. गंगा शरण जी आर्य

*गतांक से आगे*

**तांत्रिक, स्याने व बाबा कैसे दिखाते हैं चमत्कार? विज्ञान बनाम चमत्कार**

(श्री बी. प्रेमानन्द ''डिस्कवरी'' व ''नेशनल ज्योग्राफिक'' चैनल पर तांत्रिकों व बाबाओं के चमत्कारों की पोल खोलते रहते हैं। पाठकों से अनुरोध है इस जानकारी का दुरूपयोग न करें- डॉ. गंगा शरण आर्य) चमत्कार 1- फूलों को झुका देना कोल्हापुर के एक बाबा, दत्ता बल ने घोषणा की कि उस के सामने फूल और पौधे भी आदर से नतमस्तक हो जाते थे। क्योंकि वे शिव का अवतार थे। उन्होंने स्वयं को वैज्ञानिक अवतार भी बताया, क्योंकि वे विज्ञान विषय में स्नातक थे। वह बहुत कम आयु में हेपाटाइटिस के कारण चल बसे। साम्रगी–क्लोराइड का स्प्रे, नाजुक फूल पौधे।

**विधि-** नाजुक फूल, पौधों पर क्लोराइड छिड़क दें। एनस्थीसिया के कारण पौधे, फूल मुरझाने लगते हैं और झुक जाते हैं। चमत्कार 2–भूत जलाना अधिकार स्थापित करने की भावना 95 प्रतिशत लड़कियों, विवाहित स्त्रियों और वृद्धाओं में पाई जाती है और सिर्फ 5 प्रतिशत पुरूषों में यह भावना मिलती है।

अधिकार स्थापित करने का यह रोग घरों की समस्याओं से प्रारंभ होता है जब व्यक्ति को परिवार से पर्याप्त स्नेह और ध्यान नहीं मिलता। अतृप्त यौन इच्छा भी अधिकतर स्त्रियों के लिए परेशानी का कारण होती है। वृद्धाओं को यह कष्ट होता है कि उन के पति या बेटे उन की ओर पूरा ध्यान नहीं दे रहे हैं। इन समस्याओं का कारण जानने के स्थान पर वे इलाज हेतु तांत्रिकों के पास पहुँच जाती है। ये तांत्रिक उनकी समस्याएँ समझते हैं और परिवार का शोषण करने के लिए वे महिला को कुछ करतब सिखा देते हैं या किसी मृतात्मा या भूत को भगाने के बहाने वे आग जला कर किसी पशु की बलि चढ़ा देते हैं। पीड़ित व्यक्ति को पीट–पीट कर उस के मुँह से किसी मृत व्यक्ति का नाम उगलवा लेते हैं।

यदि मामला पेचीदा होता है तो उस पर कोई चूर्ण डाल दिया जाता है जो पसीने में धुलने पर शरीर में जलन उत्पन्न करता है। तांत्रिक उसे डराता है कि यदि उस आत्मा का नाम नहीं बताया तो वह उस की आँखों में चूर्ण डाल देगा। यह चूर्ण वास्तव में पिसी हुई मिर्च होती है। कभी–कभी उस के शरीर को लोहे की सलाखों से भी दागा जाता है। दर्द और दहशत के कारण वह ठीक हो जाती है। मृतात्मा या भूत भगाने के लिए वह उस के हाथ में एक नारियल देता है, जिस में उस के अनुसार उक्त प्रेतात्मा घुसी हुई है। वह दोनों हाथों से नारियल पकड़ती है, और तांत्रिक उस नारियल पर तब तक पवित्र जल छिड़कता है जब तक उस में से आग की लपटें नहीं निकल पड़ती। फिर वह नारियल जमीन पर पटका जाता है और उस में से खून की धारा बहने लगती है। वह समझाता है कि भूत मर गया है और उस का खून बह रहा है। सामग्री–1 नारियल जिस के ऊपर जटाएँ हों, सोडियम धातु, एक बड़ी सिरिंज, पोटेशियम परमैंगनेट, पानी और मोम। विधि–नारियल के ऊपर तीन आँखें बनी होती है। जिन में एक कुछ मुलायम होती है। पानी में पोटेशियम परमैंगनेट का गाढ़ा घोल तैयार करें और मुलायम आँख के जरिए सिरिंज द्वारा नारियल में डाल दें और इस सुराख को मोम से भर दें।

प्रदर्शन से पहले, सोडियम धातु का एक टुकड़ा नारियल की जटा में डाल दें, एक दर्शक से कहें कि शरीर से कुछ दूरी पर हाथ कर के नारियल को पकड़ लें। पानी छिड़कते हुए मंत्रोच्चार करें। अचानक जोर का धमाका होगा। फिर नारियल को तोड़ दें। पोटेशिम परमेंगनेट का घोल और नारियल पानी खून की तरह बहने लगेंगे। सोडियम और पानी की प्रतिक्रिया होती है और आग जल उठती है।

चमत्कार 3– नारियल फोड़ने पर उस में से फूल झड़ना, यह प्रमाणित करने के लिए कि भगवान प्रसन्न हैं, तांत्रिक नारियल फोड़ता है और उस में से खिले हुए फूल झड़ते हैं।

**सामग्री**– 1 नारियल, जास्मीन के फूल, मोटी सुई, मोम। **विधि**– नारियल की मुलायम आँख हटा कर उस में से पानी निकाल लें और इस छेद में से एक–एक कर के जास्मीन की कलियाँ डाल दें। इस सुराख को मोम से भर कर उस के ऊपर जटाएँ लगा दें। यह सब एक रात पहले कर लें।

एक दर्शक को स्टेज पर बुलाएँ और उसे नारियल देकर तोड़ने को कहें। जास्मीन के फूल देख कर वह खुश हो जाएगा चमत्कार 4–झोपड़पट्टियों में अचानक

आग लग जाना।

कई गाँवों में झोपड़पटियों में अचानक आग लग जाती है जिस को तांत्रिकों या भूतों का काम समझा जाता है। सामग्री-गीला गोबर, पीला फास्फोरस।

**विधि-** भारतीय गाँवों में लोग गोबर के कंडे बना कर फूस की छत पर सुखा देते हैं और इसे ईधन के रूप में प्रयोग करते हैं।

गीले कडे में पीला फास्फोरस मिला दें जब वह धूप में सूखेगा, तो उस में आग लग जाएगी और झोंपड़ी भस्म हो जाएगी।

**चमत्कार 5-** अलमारी में रखे या सूखने के लिए रखे कपड़ों में अचानक आग लग जाना। यह भी भूत प्रेतों का काम माना, जाता है।

**सामग्री-** पीला या सफेद फास्फोरस का घोल और कार्बन डाई सल्फाइड, 1-6 के अनुपात में।

**विधि:** थोड़ा सा यह घोल कपड़ों पर लगादें। थोड़ी ही देर मे जब यह सूखेगा, तो इस में आग लग जाएगी।

जब कोई चीज चोरी हो जाती है तो चोर को पकड़ने के लिए लोग तांत्रिक के पास जाते हैं। एक सूखी लकड़ी को जमीन पर गाढ़ कर उस के ऊपर शंख रख दिया जाता है। उस के बाद थोड़ा पानी पर मंत्र पढ़ कर उस को लकड़ी और शंख पर छिड़क दें। अचानक ही शंख धीरे से हिलने लगता है और जब हिलना रूक जाता है तो तांत्रिक कहता है कि यदि तीन दिन के भीतर चोरी का माल वापस नहीं आता तो चोर भयानक मौत मारा जाएगा। फिर वह लकड़ी को दो हिस्सों मे तोड़ देता है। तीन दिन के भीतर चोरी का माल उस दिशा में मिलता है जिस दिशा की ओर शंख घूमा था।

**सामग्री-** 6 की सूखी लकड़ी, शंख, कलश में पानी।

**विधि-** लकड़ी के दोनों छोरों को जितना हो सके मरोड़ दें। उस को जमीन में गाड़ कर उस के ऊपर शंख रखें। मंत्रोच्चार करते करते लकड़ी पर पानी डालें। लकड़ी के साथ-साथ शंख भी घूम जाता है।

चमत्कार 7- प्रार्थना द्वारा मोमबत्ती जलाना।

मद्रास दूरदर्शन पर पादरी दिलकरन् ने प्रार्थना द्वारा मोमबत्तियाँ प्रज्जवलित कर दी।

**सामग्री-** पीले या सफेद फॉस्फोरस और कार्बन डाई सल्फाइड का 1:1 अनुपात में घोल, 1 बड़ी नई मोमबत्ती स्टैण्ड पर रखें। मंत्रोच्चार करें और जब यह घोल हवा में उड़ जाएगा, तब मोमबत्ती जल उठेगी।

चमत्कार 8- छू लेने से ही मोमबत्तियों का जल जाना।

**सामग्री-** 2 मोमबत्तियाँ, क्रोमिक एसिड के क्रिस्टल, शुद्ध मिथाइल या इथाइल एल्कोहल।

**विधि-** मोमबत्ती की लौ के नीचे के घेरे में क्रोमिक एसिड वाली मोमबत्ती से छुआएँ। दोनों जल उठेंगी।

चमत्कार 9- उंगलियों से धुआं निकलना।

कुछ तांत्रिक यह सिद्ध करने के लिए कि जब वे ध्यान में होते हैं तब उनके शरीर से ताप उत्पन्न होता है, अपनी तर्जनी और अंगूठे को रगड़ते हैं और उसमें से धुआँ निकलने लगता है।

**सामग्री-** पीला फॉस्फोरस और कार्बन डाईसल्फाइड घोल, 1:6 अनुपात में।

**विधि-** घोल की कुछ बूंदें उंगली पर टपका कर जल्दी जल्दी रगड़ें तो धुआँ उत्पन्न हो जाएगा। आप जितना रगड़ेंगे उतना ही धुआं उठता जाएगा। उंगलियों को रगड़ते समय उन पर ऐसे ध्यान लगाएँ मानों आप अपनी मानसिक शक्तियों का प्रयोग कर रहे हैं।

---

**( पृष्ठ 25 का शेष )**

यही पुत्र का परम कर्तव्य है। सत्य ही मुझे सब वस्तुओं से अधिक प्रिय है। भरत अपनी बात पर अड़े रहे, इधर राम भी लौटने को तैयार नहीं थे। सबने राम को खूब समझाया-बुझाया, परन्तु राम अपने निर्णय पर अडिग रहे। भरत ने देखा कि श्रीराम अयोध्या किसी भी तरह नहीं लौटेंगे तो उन्होंने कहा, आप अपनी पादुकाएं मुझे दे दें। इन्हें सिंहासन पर विराजमान कर इन्हीं से आज्ञा लेकर चौदह वर्ष तक राज-काज चलाऊँगा अगर आप चौदह वर्ष पूरा होते ही अयोध्या नहीं लौटे तो मैं चिता में कूदकर अपने प्राणा दे दूँगा। राम की खड़ाऊँ लेकर भरत अयोध्या वापस आए। उन्होंने सिंहासन पर राम की पादुकाओं को स्थापित किया और अयोध्या का सारा प्रबन्ध कर के नन्दीग्राम में मुनिवेश बनाकर रहने लगे। समझे बेटा सोनू-मोनू और पोता भास्कर चन्द्र विनीत उर्फ ईसू बाबू!

-शीला भवन, शिवशक्ति नगर, बाजार समिति, पटना-800006, मो. 9304120579

# बहुत पावन है मकर संक्रान्ति

भारत पर्वो तथा त्यौहारों का देश है, जहाँ प्रतिदिन कोई उत्सव तथा पर्व होता है। जिसमें अपार श्रद्धा तथा आस्था का स्थान होता है, मकर संक्रान्ति एक खगोलशास्त्र का पर्व है, जिसमें सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में मकर राशि में प्रवेश करता है, यानी पृथ्वी की धुरी तिरछी होने के कारण उसकी वार्षिक गति के फलस्वरूप सूर्य दिनांक 22 जून को कर्क रेखा पर दृष्टिगोचर होता है तथा 21 दिसम्बर को प्रतिवर्ष मकर रेखा पर, इसी अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं, अर्थात् कर्क रेखा से दक्षिणायन की ओर (मकर रेखा तक) सूर्य का प्रस्थान दक्षिणायन कहलाता है तथा 22 दिसम्बर से सूर्य उत्तर दिशा की ओर गमन करता है तथा 21 जून को कर्क रेखा पर पुन: दृष्टिगोचर होने लगता है, वही 6 माह की अवधि 'उत्तरायण' कहलाती है। जो धार्मिक मान्यताओं के अनुसार 'देवकाल' कहलाता है, तो सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करता है उस दिन संक्रान्ति लेकिन जब धुन राशि से मकर में प्रवेश करता है तो मकर संक्रान्ति कहलाती है। उत्तरायण की स्थिति में दिन बड़ा तो रात छोटी तथा दक्षिणायन में रात लंबी तो दिन छोटा होता है, वैसे प्रतिवर्ष 21 मार्च तथा 22 सितम्बर को दिन रात बराबर होते हैं। 21 जून को सबसे बड़ा दिन तथा सबसे छोटी रात होती है, तो 23 दिसम्बर को सबसे बड़ी रात व सबसे छोटा दिन होता है।

भारत में कैलेण्डर को लगभग सभी प्रांतो में पृथक-पृथक नाम से पुकारते हैं तथा मनाते हैं, पंजाब तथा हरियाणा में 'लोहड़ी', असम में 'बिहू' हिमाचल में 'माघी', दक्षिण भारत में 'पोंगल', महाराष्ट्र में 'मोगी' उड़ीसा में 'पाना', कश्मीर में 'शिंकुर', उत्तर प्रदेश में 'खिचड़ी', तो सिन्धी समाज में लाल लोही के रूप में अपनी परम्पराओं तथा मान्यताओं के आधार पर हर्ष तथा उल्लास मनाते हैं। हिन्दुओं की धार्मिक मान्यताओं के आधार पर कहा जाता है कि महाभारत के युद्ध के 10वें दिन अर्जुन के बाणों से ग्रसित भीष्म पितामह ने 48 दिन तक शर शैया पर लेटे रहने के पश्चात् सूर्य उत्तरायण में आने के पश्चात ही प्राण छोड़ने का संकल्प लिया था। इधर 'ब्रह्माण्ड पुराण' के अनुसार यशोदा ने दही मंथन के बाद इस सुअवसर पर दान दिया था। जिसके कारण ही 16 कलाओं से परिपूर्ण श्रीकृष्ण जैसा पुत्र उत्पन्न हुआ था। जनमानस की यहाँ यह भी धार्मिक मान्यता है कि इस दिन देवता पृथ्वी पर उतरते हैं, इसीलिए गंगासागर में स्नान का विशेष महत्त्व माना गया है। वास्तव में मकर संक्राति से सूर्य में परिवर्तन होने लगता है, रात्रि छोटी तो दिन लम्बे होने लगते हैं यानी अंधकार के स्थान पर प्रकाश की निरन्तर बढ़ोत्तरी होने लगती है, इधर शीत ऋतु से बसंत का आगमन होता है, अज्ञान में ज्ञान का प्रवेश होने लगता है, इसए यह दिन मंगल दायक, शुभ तथा आनन्द का प्रतीक होता है मांगलिक कार्यो का शुभारम्भ होने के साथ ही सर्दी की ठिठुरन के बाद गर्मी का आगमन होता है। इसलिए शीत को शान्त करने के लिए सूर्य की आराधना करके ऊर्जा प्राप्त करना चाहते है, लोग आसपास की पवित्र नदी, तालाब अथवा तीर्थो में जाकर स्नान करते हैं, गुड, तित, तालाब अथवा तीनों में जाकर स्नान करते हैं, गुड़, तिल, वस्त्र आदि का दान करते हैं, पशुओं को चारा डाला जाता है, पंजाब व तमिलनाडु में नयी फसल के आगमन का स्वागत किया जाता है। चूंकि मकर संक्रान्ति सूर्य की उपासना का त्यौहार है, अत: इस दिन स्नान, दान तथा चिन्तन का विशेष महत्व है, भारत के कुछ भागों में गुल्ली-डंडा खेला जाता है। तो गुजरात, राजस्थान के घर-घर पतंग, उड़ाकर इस त्यौहार का आनन्द लिया जाता है।

# हंसो और हंसाओ

**- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़**

- **नौकरानी (बहु से)**-मेम साहब जल्दी आईए, पड़ोस की तीन औरतें बाहर आपकी सास की पिटाई कर रही है।
  **बहु**-बालकनी में आकर देखने लगी।
  **नौकरानी**-आप उनकी मदद करने नहीं जायेंगी।
  **मालकिन**-नहीं रहने दो उसे पीटने के लिए तीन ही काफी है?
- **नरेश**-मेरा बाथरूम 10 लाख का है।
  **सुरेश**-मेरा बाथरूम 20 लाख का है।
  **हरीश**-मेरा बाथरूम 50 लाख का है।
  **गांव का पप्प**-मैं जहां सुबह लोटा लेकर जाता हूं उस खेत की कीमत 7 करोड़ है और ऐसे बाथरूम तो हम रोज बदल देते हैं।

# संविधान लागू होने की 76वीं वर्षगांठ

**- शैलेन्द्र जौहरी, एडवोकेट**

- स्वतन्त्र एवं खंडित भारत का संविधान बनाने के लिए 289 सदस्यों की संविधान सभा बनाई गई थी जिसने नेहरू की सोच-चिन्तन व मानसिकता के समर्थकों का प्रखण्ड बहुमत था।
- संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बने और प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर बनाए गए।
- दिनांक 26.11.1949 को संविधान सभा ने संविधान स्वीकार किया और 26 जनवरी 1950 से संविधान लागू हुआ।
- 21 देशों के संविधानों को पढ़ने और समझने के बाद यह संविधान तैयार किया गया।
- इसमें 395 धाराएं हैं। 8 अनुसूचियां हैं। यह संविधान विश्व में सबसे बड़ा लिखित संविधान है। मूल संविधान अंग्रेजी में है। अब अनेकों भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।
- इसे बनाने में 2 वर्ष 11 महीने और 18 दिन लगे। इस दौरान 7635 सूचनाओं पर चर्चा की गई।
- इसे बनाने में 6 करोड़ 39 लाख 6 हजार और 7 सौ 29 रूपये लगे।
- इसमें लगभग 125 संशोधन हो चुके हैं।
- डॉ. अम्बेडकर वास्तव में सावरकरवादी विचार धारा के थे लेकिन पं. नेहरू और उनके समर्थकों ने प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से दबाव डालकर समझकर उनसे हिन्दू विरोधी संविधान बनवा लिया।
- हिन्दू महासभा एवं हिन्दूवादी संगठन इस संविधान को कतई पसन्द नहीं करते हैं।
- गांधीवादी-तुष्टीकरणवादी-कुर्सीवादी इस संविधान की प्रशंसा करते हैं और डॉ. अम्बेडकर की जयन्ती जोर शोर से मनाते हैं।
- डा. अम्बेडकर ने संविधान सौंपते समय स्पष्ट रूप से कहा था कि यह संविधान उत्तम नहीं है। ऐसा संविधान मुझ से बनवाया गया है जबकि मेरी विचार धारा इसके अनुकूल नहीं है।
- इस संविधान से अनुसूचित जाति (जाटव, बाल्मीक, धोबी आदि) तथा अनुसूचित जनजाति (आदिवासी, जंगलो में रहने वालें, पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वालों आदि) को वास्तव में लाभ पहुंचा है। क्योंकि उन्हें शिक्षा, नौकरी, कार्यपालिका, न्यायपालिका में आरक्षण दिया गया है जो अभी तक जारी है।
- देश का नाम सभी भाषाओं में हिन्दू देश, हिन्दू राष्ट्र या हिन्दुस्तान रखा जाता।
- हिन्दू धर्म (सनातन धर्म, वैदिक धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म को राजकीय/सरकारी धर्म घोषित किया जाता।
- अहिन्दुओं (मुस्लिम, ईसाई, पारसी, यहूदी) को मताधिकार नहीं देने की, वीर सावरकर की उचित मांग, अवश्य मानी जाती।
- अहिन्दुओं के पर्वो पर सरकारी अवकाश बन्द कर दिया जाता।
- अनुसूचित जाति/जनजाति को आरक्षण आर्थिक आधार पर दिया जाता न कि जाति के आधार पर।
- जनगणना के फार्म में जाति में आर्य और धर्म में वैदिक धर्म का कॉलम रखने की महर्षि दयानन्द की उचित मांग अवश्य पूरी की जाती।
- पूरे देश में गोहत्या बन्दी, शराबबन्दी लागू की जाती और 756 वर्षो के मुस्लिम शासन काल में भ्रष्ट किए गए 3032 छोटे बड़े मन्दिरों का जीर्णोद्वार पुर्ननिर्माण करने का प्रावधान किया जाता। उपरोक्त कार्य करने से हिन्दू के आंसू पोछते और उसके चेहरों पर मुस्कान दिखाई देती।

- 455, धर्म सिंह वाली गली, साठा,
बुलन्दशहर-203001,
मोबाइल-09897033358

# नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने महान बलिदान देकर देश को स्वतन्त्र कराया

–डॉ. विनयकुमार 'विष्णुपरी'

देश को आजादी दिलानें में अगणित लोगों ने बलिदान दिये हैं। सबके बलिदान महान व नमन करने योग्य हैं। कुछ ऐसे नेता भी होते हैं जिनका योगदान कम परन्तु प्रचार अधिक होता है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ऐसे नेता नहीं थे। उनका बलिदान भी महान था और उन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए जो कार्य किये वह भी महान एवं नमन करने योग्य हैं। उन जैसे चरित्रवान देशभक्त नेता देश के इतिहास में बहुत कम हुए हैं जो प्रचार से महान नहीं बने अपितु अपने श्रेष्ठ कामों व देश के लिए बलिदान की भावना रखने से महान बने हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र जी का जन्म 23 जनवरी सन् 1897 को कटक में हुआ था। इनके पिता श्री जानकीनाथ बोस एवं माता श्रीमती प्रभावती दत्त थी। नेता जी का विवाह आस्टिया मूल की नारी इमिल सेहन की जी से 1934 में हुआ था। इन्होंने नवम्बर, 1942 में जर्मनी में एक पुत्री को जन्म दिया था जिसका नाम अनीता बोस है और जो वर्तमान में लगभग 77 की आयु में जर्मनी में ही निवास करती हैं।

दिनांक 16 अगस्त सन् 1945 में ताइवान में एक वायुयान दुर्धटना में उनकी मृत्यु हुई, ऐसा कहा जाता है परन्तु बहुत से देशभक्तों का अनुमान है कि नेताजी इस वायुयान दुर्घटना में मरे नहीं थे। वह इसके बाद भी जीवित रहे और देश के किसी आश्रम में रहते हुए उच्चस्तरीय आध्यामिक महापुरुष का जीवन व्यतीत करते थे। जिस प्रकार से अरविन्द घोष क्रान्तिकारी होकर आध्यात्म के मार्ग पर चले थे उसी प्रकार से नेताजी भी ताइवान की घटना के बाद भारत में पहुंच कर किसी आश्रम में आध्यात्मिक योग ध्यान एवं समाधि की साधना करते हुए समाज से अपनी वास्तविकता को छिपाते हुए विलीन हो गये। सन् 1945 में उनकी आयु मात्र 48 वर्ष 5 माह की ही थी। देहरादून के राजपुर क्षेत्र में किशनपुर में एक स्थान पर एक महात्मा जी कई कई दिन की समाधि लगाते थे। जब उनकी मृत्यु हुई तो वहां नेताजी के एक मित्र श्री उत्तम चन्द मल्होत्रा भी विद्यमान थे। वह लोगों को बता रहे थे कि यह मृतक ईश्वर का उपासक कोई और नहीं अपितु नेताजी सुभाषचन्द्र बोस थे। हम भी उस दिन उस अवसर पर वहां उपस्थित थे। बाद में उस मृतक शव को हरिद्वार या ऋषिकेश में ले जाकर राजकीय सम्मान के साथ पंचतत्वों में विलीन कर दिया गया था।

आज 23 जनवरी को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का 123वां जन्म दिवस है। नेताजी जब तक भारत में रहे वह कांग्रेस के सबसे अधिक, शायद गांधी और नेहरू जी से भी अधिक, लोकप्रिय नेता थे। देश की आजादी के बाद की सरकारों ने उनके देश की आजादी में योगदान के अनुरूप उन्हें सम्मान नहीं दिया। ऐसा अनुभव सभी देश प्रेमी करते हैं। कांग्रेस दल के कुछ बड़े नेताओं के विरोध के कारण, जबकि वह कांग्रेस के अध्यक्ष थे, उन्होंने वीर सावरकर जी की प्रेरणा से विदेश में जाकर देश की आजादी के लिए कार्य करने का निर्णय किया था। जब वह देश से निकले उस समय वह अंग्रेजी द्वारा हाउस अरेस्ट किए हुए थे। वहां से चलकर वह जर्मनी पहुंच गये थे। जर्मनी पहुंच कर वह वहां अंग्रेजों के शत्रु एवं विश्व प्रसिद्ध शासक एडोल्फ हिटलर से मिले थे और उनसे भारत की आजादी में सहयोग करने का प्रस्ताव किया था। उनका नैतिक व आर्थिक समर्थन उनको प्राप्त हुआ था। उन्होंने भारत की आजादी के लिए आजाद हिन्द फौज (आई.एन.ए) का गठन किया था। इसमें जापान का सहयोग भी प्राप्त हुआ था। इस आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों पर पूर्वी भारत की ओर से आक्रमण कर उनकी सत्ता को चुनौती दी थी। नेताजी के कार्यों में देश के राजनीतिक दल कांग्रेस पार्टी से जो सहयोग व समर्थन मिलना चाहिए था, वह उनको नहीं मिला। आजाद हिन्द फौज ने देश को आजाद कराने के लिए नेताजी के नेतृत्व में जो आन्दोलन, संघर्ष, युद्ध व लड़ाई लड़ी, उसने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को भारत का सबसे अधिक लोकप्रिय नेता बना दिया था। आज भी उनकी प्रसिद्धि उनके समकालीन अनेक बड़े नेताओं से कहीं अधिक हैं। नेताजी देश की प्रबुद्ध जनता के हृदय में विराजमान हैं और उनका सम्मान व पूजा करते हैं। हम,

यह भी अनुमान करते हैं कि यदि देश की आजादी के समय नेताजी राजनीति में सक्रिय होते ओर किसी प्रकार से नेताजी और सरदार पटेल सहित वीर सावरकर आदि में से किसी एक या तीनों को सामूहिक रूप से देश की सत्ता प्राप्त हुई होती तो भारत आज विश्व का सबसे उन्नत एवं सबसे बलशाली देश बनता। यह हमारे निजी विचार हैं। ऐसा होना सम्भव था क्योंकि इन नेताओं को देश को किस ओर ले जाना है, यह स्पष्ट था और यह लोग कभी भी वोट बैंक की राजनीति न करते जिससे देश में समरसता एवं एक देश, एक विधान एवं सबकों समान रूप से बिना भेदभाव के न्याय प्राप्त होता। ऐसा होने पर ऋषि दयानन्द सरस्वती को उनके देशहित के कार्यों व सर्वहितकारी वैदिक विचारधारा को भी उचित सम्मान प्राप्त हो सकता था। इतिहास में किन्तु परन्तु के लिए कोई स्थान नहीं होता। जो हुआ वह हमारे सामने हैं। आज देश का सौभाग्य है कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का अनुयायी एवं उनको उचित सम्मान देने वाला प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी देश चला रहा है।

नेताजी ने अंग्रेजों पर पूर्वी भारत की ओर से जो आक्रमण किया था, उसमें उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई। इस पर भी वह रूस आदि के सहयोग से अपने काम को जारी रखे हुए थे। ताइवान की घटना के बाद वह लापता हो गये। सरकारी दृष्टि से उनको मृतक मान लिया गया था। देश के उनके भक्त उन्हें जीवित भी मानते रहे हैं। जो भी हो अब वह संसार में नहीं है। अब यदि वह होते तो 122 वर्ष के होते। हमारा अनुमान है कि नेताजी आजादी के बाद देहरादून के राजपुर क्षेत्र में किशनपुर में एक साधारण से निवास स्थान पर रहे थे। लगभग 50 वर्ष पूर्व वहां उनका निधन हुआ था। मृत्यु होने के बाद हम भी उस स्थान पर पहुंचे थे। उन दिनों अध्ययन के साथ हम समाचार पत्र के हाकर का काम भी करते थे। उस क्षेत्र के घरों व कोठियों में हम कई महीनों से समाचारपत्र दिया करते थे। वहां वृद्ध उत्तम चन्द मलहोत्रा आदि लोग, जो नेताजी से जुड़ रहे थे, उस स्थान पर एकत्र हुई जनता को बता रहे थे कि वह मृतक संन्यासी जो कई कई दिन की समाधि लगाता था, वह नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जी ही थे। इस स्थान पर रहते हुए वह किसी से मिलते नहीं थे। भोजन कराने वाला व्यक्ति भोजन बना कर रखा जाता था और कुछ घंटों बाद बर्तन उठा कर ले जाता था। जहां उनका निवास था उसके साथ ही जंगल व झाड़ियां थी। जो कभी किसी सम्भावित पुलिस कार्यवाही होने पर भागने व छुपने में सहायक थी। इस प्रकार की बातें हमें स्मरण हो रही हैं जो मलहोत्रा जी वहां कह रहे थे। बाद में हमने सुना था कि प्रशासन ने उन्हें ऋषिकेश या हरिद्वार ले जाकर पुलिस की बन्दूकों से सलामी देते हुए अन्त्येष्टि संस्कार कराया था। यह सब बातें हमारे निजी अनुभव की हैं। सत्य क्या था यह कहना सम्भव नहीं है परन्तु अनुमान तो यही था कि वह व्यक्ति नेताजी हो सकते थे। नेता जी सन् 1920 से 1930 के बीच भारत राष्ट्रीय कांग्रेस की युवा शाखा के नेता थे। वह सन् 1938 में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने थे तथा सन् 1939 तक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। गांधी जी से मतभेदों के कारण उन्होंने सन् 1939 में कांग्रेस छोड़ दी थी। इसके बाद अंग्रेजों ने उनको घर पर नजरबंद किया था जहां से वह सन् 1940 के अंग्रेजी अधिकार वाले भारत को छोड़कर विदेश चले गये थे और कुछ समय बाद जर्मनी पहुंच गये थे। नेताजी अप्रैल सन् 1941 में जर्मनी पहुंचे थे। वहां के नेताओं की ओर से भारत की आजादी के लिए उनको अप्रत्याशित सहानुभूति, समर्थन व सहयोग प्राप्त हुआ था। नवम्बर, 1941 में जर्मनी से प्राप्त आर्थिक सहायता से उन्होंने बर्लिन में आजाद भारत केन्द्र की स्थापना की थी। इसके साथ ही वहां आजाद भारत रेडिया भी स्थापित किया गया था जहां रात्रि समय में नेताजी का सम्बोधन प्रसारित हुआ करता था। जर्मनी में रहते हुए नेताजी को भारत की आजादी के लिए कार्य करने के लिए अनेक प्रकार से सहयोग मिला।

आजाद हिन्द फौज के गठन में नेताजी को जापान का सहयोग प्राप्त हुआ था। नेताजी ने जापान के सहयोग से जापान के उपनिवेश अण्डमान एवं निकोबार में भारत की आजाद सरकार भी बनाई व चलाई थी। यह कोई कम बड़ी उपलब्धी नहीं थी। नेताजी देश के बहुप्रतिभा सम्पन्न एवं करिश्माई व्यक्तित्व वाले नेता थे। नेताजी ने ही देश को "जय-हिन्द" तथा "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा" का नारा वा स्लोगन दिया था जो आजादी के आन्दोलन में बहुत लोकप्रिय हुआ। आज नेताजी के 123वें जन्मदिवस पर हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। नेताजी अमर हैं और सदा अमर रहेंगे। ओ३म् शम्।

# आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

| | |
|---|---|
| श्रीमती सन्तोष जी सिंघल द्वारा स्व. वेदप्रकाश जी की स्मृति में | 11000/- |
| आर्य केन्द्रीय सभा एवं आर्य समाज भीम नगर गुरुग्राम, हरि | 11000/- |
| श्री रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-102, गुरुग्राम | 6100/- |
| श्रीमती गीना देवी जी गोयल, सैक्टर-24, रोहिणी दिल्ली | 5100/- |
| श्री ओ.पी. गुप्ता जी, अशोक विहार फेस-1, दिल्ली | 5000/- |
| श्रीमती ब्रह्मादेवी जी नेहरू पार्क, बहादुरगढ़ बच्चों के गर्म कपड़े हेतु | 5000/- |
| श्री सिद्धार्थ जी चड्डा, सैक्टर 102, गुरुग्राम | 4000/- |
| श्री रवि जी आर्य एच.एल. सिटी, बहादुरगढ़ | 3900/- |
| श्री कर्नल राजेन्द्र जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 3000/- |
| श्री यशस्वी जी, लाईनपार, बहादुरगढ़ | 2100/- |
| श्रीमती स्व. विमला सिंघल जी, दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ | 2100/- |
| श्रीमती ममता जी पानीपत | 2100/- |
| श्री संजू जी परनाला, बहादुरगढ़ | 2000/- |
| श्री उमेश कुमार जी, नई बस्ती, बहा. छात्रवृत्ति | 2000/- |
| श्री तुषार जी गुलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री रामानन्द जी सिवान, बिहार, छात्रवृत्ति | 1000/- |
| श्री रणवीर सिंह जी, कु. 9, वैदिक वृद्धाश्रम, बहा. छात्रवृति | 1000/- |
| श्री रविन्द्र जी आर्य सैक्टर-2, बहादुरगढ़ छात्रवृत्ति | 1000/- |
| श्री रामदेव जी आर्य रोहतक | 550/- |
| श्री बलवान सिंह जी मेहरा, सैक्टर-2, बहादुरगढ़ | 501/- |
| श्री तिलक राज जी गुलाटी, सन्त कॉलोनी, बहा. | 500/- |
| श्री अतर सिंह जी आर्य, आर्य नगर, बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्रीमती कृष्णा देवी जी नई बस्ती, बहादुरगढ़ | 500/- |
| स्व. श्रीमती सुमित्रा देवी जी की पुण्य स्मृति पर, धर्मविहार, बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्री साहिल जी छिल्लर बहादुरगढ़ | 500/- |

## गौशाला हेतु दान

माता श्रीमती कृष्णा जी ने **एक गौ दान** किया।

| | |
|---|---|
| स्व. श्री वेद प्रकाश जी सिंघल की स्मृति में सिंघल परिवार | 21000/- |
| श्रीमती सन्तोष माता जी कु. 4 वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्रीमती सविता जैन जी आर.के.पुरम दिल्ली | 1100/- |
| श्रीमती वीणा गुप्ता जी रोहिणी दिल्ली | 1100/- |
| श्री सतीश जी वर्मा | 1000/- |
| श्री रमन जी नरूला, सैक्टर-6 | 1000/- |
| स्व. श्रीमती केसरवती, ईश्वर कॉलोनी, बवाना, दिल्ली | 500/- |
| श्री विजय कुमार जी बहादुरगढ़ | 500/- |
| श्री लक्ष्य जी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ | 500/- |

## विविध वस्तुएं

1. श्री सूर्यकान्त जी अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 25 किलो चावल
2. श्री सत्यपाल जी दलाल अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सभी बच्चों के लिए केक, मूँगफली, रेवड़ी एवं केले
3. श्री राजवीर जी मलिक शंकर गार्डन लाईनपार बच्चों के लिए 30 किलो लड्डू।
4. श्री गौरव जी मलिक अपनी पुत्री अनिका जी मलिक के जन्म दिवस के अवसर पर ब्रेड पकौड़, फ्रूटी, चिप्स
5. गुप्त दान 10 किलो आटा, 5 किलो दाल, 5 किलो चावल
6. श्री धर्मपाल जी अपने पुत्र की शादी के अवसर पर मिठाईया दी।
7. श्री अनिल कुमार जी आश्रम में 11 गरम चादर दिए।
8. श्री राजेश जी रिहानी बच्चों के लिए मूँगफली एवं गजक।
9. श्रीमती विमल जी भारद्वाज धर्मपत्नी श्री कमांडर लक्ष्मी नारायण जी अपनी समस्त कीर्तन मंडली के साथ आश्रम में बच्चों को जैकेट एवं मिठाई वितरित किए।
10. श्री जतिन जी अपने जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आश्रम में सभी के लिए समोसे।
11. श्री देवेन्द्र पाल जी अपनी स्व. माता श्रीमती सुमित्रा देवी जी की पुण्य तिथि पर आश्रम में सभी के लिए अल्पाहार एवं जुराव।
12. श्रीमती कंचन जी आश्रम में बच्चों के लिए समोसे एवं केक
13. श्री विजय जी हुड्डा अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में गुलाब जामून प्रदान किए।
14. श्री अनिल वत्स जी 10 किलो आटा, 5 किलो चीनी, 5 किलो चावल दिए।
15. श्री रमेश सुपुत्र श्री राजसिंह नम्बरदार कड़ोली प्रहलादपुर 56 कम्बल आश्रम में दान दिए।
16. श्रीमती अनिता जी एवं माता श्रीमती रजनी सहगल जी आश्रम में गर्म पानी का मयूर जग दिया।
17. श्री महेन्द्र सिंह जी बच्चों के लिए अल्पाहार
18. श्री शुभम सिंह जी सुपुत्र श्री विजेन्द्र जी शर्मा आश्रम परिवार को 30 कम्बल प्रदान किए।
19. श्री नवीन जी अपनी स्व. पुत्री सेजल जी की स्मृति में 10 लीटर दूध
20. श्री अनिल जी अपने पिता स्व. श्री राजेन्द्र जी सांगवान के शान्ति यज्ञ के उपरान्त कम्बल, बर्तन आदि दिए।
21. श्री साहिल जी आश्रम में सभी के लिए ब्रैड पकोड़।
22. श्रीमती समृद्धि जी अपने स्व. पिता के जन्मदिवस के अवसर पर सभी बच्चों के लिए समोसे।
23. श्री केशव जी अपने स्व. पिता श्री शिव कुमार जी की पुण्य स्मृति पर 10 किलो चावल 3 किलो दाल

24. श्री सूर्य प्रकाश जी बच्चों के लिए गर्म पानी पीने का मयूर जग प्रदान किया।
25. श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली 1 टीन सरसो तेल

## एक समय का विशेष भोजन

1. श्रीमती मधु जी अपने पिता श्री रणधीर सिंह जी राणा की पुण्य तिथि के अवसर पर एक समय का विशेष भोजन।
2. श्री रणधीर जी गांव लोवाखुर्द आश्रम में एक समय का विशेष भोजन।
3. श्री पंकज दहिया अपने स्व. पिता श्री राज सिंह जी दहिया की पुण्य तिथि पर एक समय विशेष भोजन।
4. श्री सौरभ श्रीवास्तव जी अपनी स्व. माता श्रीमती रीना जी की पुण्य स्मृति पर आश्रम में एक समय का विशेष भोजन।
5. श्रीमती गिना देवी जी गोयल सैक्टर-24, रोहिणी दिल्ली एक समय का विशेष भोजन
6. श्री सुमित जी नारंग अपने पुत्र के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक समय का विशेष भोजन।
7. श्रीमती सुदेश जी सन्दूजा पुस्तक विमोचन के उपलक्ष्य पर विशेष भोजन
8. श्री महावीर जी दलाल एक समय का विशेष भोजन।
9. श्री वरूण जी अपने पुत्र श्री प्रतिक जी के जन्म दिवस के अवसर पर विशेष भोजन।
10. श्री प्रवीण जी अपने पुत्र संचित जी के जन्मदिवस के अवसर पर विशेष भोजन।
11. स्व. श्रीमती नेहा जी की पुण्य तिथि पर एक समय का विशेष भोजन।
12. श्री नवीन सुपुत्र कृष्ण कुमार दिल्ली एक समय का विशेष भोजन।
13. श्री तिलक राज जी गुलाटी सन्त कॉलोनी बहादुरगढ़ आश्रम में एक समय का विशेष भोजन।
14. श्री कुणाल जी अपने पुत्र श्री रेहान जी के जन्मदिवस के अवसर पर आश्रम में एक समय का विशेष भोजन।
15. श्रीमती ममता जी मॉडल टाउन पानीपत एक समय का विशेष भोजन।
16. श्री सुर्य प्रकाश जी आर्य झज्जर की तरफ से एक समय का विशेष भोजन
17. स्व. स्वामी केशवानन्द परिवार की तरफ से एक समय का विशेष भोजन।

# दीर्घजीवी होने के उपाय

**1. निश्चित दिनचर्या:-** प्रात: सूर्योदय से पहले उठना, शौच, स्नान, भजन, भोजन, दैनिक कर्म और नींद निश्चित समय पर करने से रोग नहीं घेरते तथा शरीर स्वस्थ व बलवान रहता है।

**2. प्रकृति के निकट दिनचर्या:-** मनुष्य के आयु की एक सीमा है। आयु प्राप्त करने की शर्त यही है कि उसकी दैनिक जीवनचर्या प्रकृति के निकटतम रहनी चाहिए। रोग कोई दुर्घटना नहीं है जो अचानक आकर घेर ले अपितु रोग प्रकृति से दूर रहने का फल है।

**3. शान्त वातावरण:-** तेज शोर, हल्ला, आवाज से सुनने की शक्ति कम होती है तथा सिर दर्द, पेट खराब, अनिद्रा आदि रोग होते हैं। शान्त वातावरण हमें उत्साह एवं स्फूर्ति देता है।

**4. सक्रियता:** जीवन में प्रगति के लिए स्वस्थ, प्रसन्न एवं सक्रिय रहना चाहिए।

**5. प्रसन्नता:-** सदैव प्रसन्न रहें। ईर्ष्या न करें। हीन भावनाओं को पनपने न दें। अति भोग एवं बुरी आदतों से बचें। सकारात्मक सोचें। नकारात्मक विचारों से सदैव दूर रहें।

**6. भोजन:-** पेट भरने एवं आनन्द के लिए नहीं बल्कि स्वास्थ्य की रक्षा के लिए स्वादिष्ट व रूचिकर भोजन ग्रहण करें।

**7. संगीत:-**गाना गाने से व्यक्ति में रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है। सिर्फ शक्ति ही नहीं बढ़ती अपितु रोग से जुझने की इच्छाशक्ति भी बढ़ती है तथा व्यक्ति के स्वभाव में परिवर्तन आता है। यदि समर्पण भाव से गाया जाये तो विश्वास बढ़ जाता है और चिन्तायें दूर हो जाती हैं। समर्पण से युक्त संगीत का उदाहरण-

**प्रभु सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।।'**

**मुद्रक व प्रकाशक : आचार्य विक्रमदेव, सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 जनवरी 2025 को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

गुरुग्राम में स्वामी श्रद्धानन्द जी के 98वें बलिदान दिवस पर शोभायात्र को सम्बोधित करते हुए श्री कन्हैया लाल जी, प्रधान आत्म शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पंवार के सुपुत्र श्री जय पाल जी पंवार, श्री स्वामी रामानन्द जी, श्री कर्ण सिंह, माता सन्तोष, माता प्रमिला जी द्वारा भंडारा वितरण करते हुए।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के 98वें बलिदान दिवस पर आर्य समाज झज्जर रोड, बहादुरगढ़ द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए श्री प्रवीण सिंगल जी, श्री संत लाल जी मलिक एवम् श्री ईश्वर सिंह जी आर्य। कार्यक्रम में ऋषि लंगर भी अति उत्तम रहा।

- मन्त्री नरेन्द्र गुलाठी

आत्म-शुद्धि-पथ मासिक
जनवरी 2025
छपी पुस्तक - पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में-

# आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। अपने प्रियों के नाम पर कमरा बनवाने के इच्छुक सम्पर्क कर सकते है। आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। धन्यवाद!

-व्यवस्थापक आश्रम सम्पर्क सूत्र: 7988671343